झारखंड का हिंदी-खोरठा पाक्षिक पत्र

झार न्यूज

आपन माटी आपन देश

राँची, बुधवार
16 से 31 अगस्त 2022
पेज : 06, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 04
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19-0000800

khorthajharnews@gmail.com

डिजिटल संस्करण

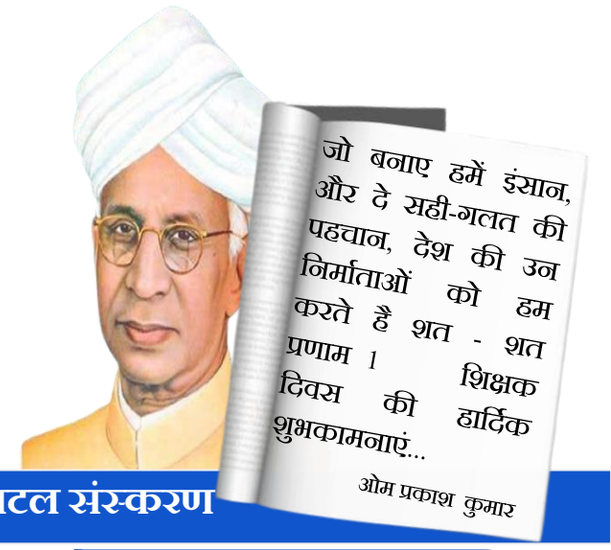

"मैं भी तो मासूम हूँ"

मैं जिंदा हूँ, मुझे जी लेने दो : पीड़िता

मुझे क्यों सताते हो ?

संवाददाता,राँची

"मैं भी तो मासूम हूँ, फिर मुझे क्यों सताते हो ? प्रेम की वीरहाग्नी में तुम जलते हो, तो फिर मुझपर एसिड क्यों गिराते हो? फिलहाल मेरा इलाज चल रहा है। मुझे ठीक होने दो, मैं अभी जिंदा हूँ, मुझे जी लेने दो।" ये शब्द झारखंड की राजधानी राँची के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल रिम्स से निकलकर सामने आए हैं। जहाँ एक पीड़िता अपने साथ हुए अन्याय की कहानी को अपने शब्दों में बयां कर रही है।

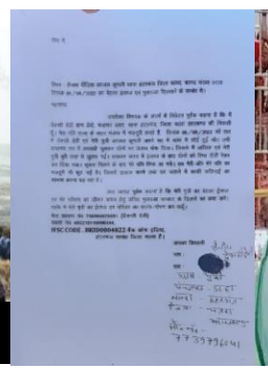

यह आवाज किसी सामान्य मरीज की नहीं, बल्कि रिम्स में भर्ती 17 साल के काजल की है। चतरा जिला के हंटरगंज थाना क्षेत्र के डाहा पंचायत अंतर्गत ढेबो गांव निवासी काजल इन दिनों रिम्स में जिंदगी और मौत से जूझ रही है। काजल के भाई के मुताबिक 04 अगस्त की रात अपराधी ने घर में घुसकर काजल के शरीर पर तेजाब उड़ेल दिया। इस घटना में काजल की माँ देवन्ती देवी भी घायल हुई हैं। दरअसल मामला एक तरफा प्यार का बताया जा रहा है और आरोप पास के गाँव में रहने वाले संदीप भारती पर लगा है। संदीप पर आरोप है कि वह काजल को शादी के लिए उकसा रहा था। लेकिन जब काजल ने मना कर दिया, तो संदीप ने काजल के घर में घुसकर वारदात को अंजाम दिया। इस घटना ने न सिर्फ समाज को शर्मसार किया है, बल्कि पूरे देशभर के नागरिकों को झकझोर कर रख दिया है।

मैं ठीक हो जाऊँगी, तो आगे की पढ़ाई पूरी करूँगी : सुनीता

"उसने मुझे लोहे से मारा, पूरे शरीर में चोट के निशान हो गए, बीस दिनों तक घर में बंद रही, यातनाएँ सहती रही, आयुष्मान भैया के सहयोग से मेरी जान बची। अगर मैं ठीक हो जाऊँगी, तो आगे की पढ़ाई पूरी करूँगी।" ये शब्द भी झारखंड की राजधानी रांची स्थित रिम्स के सर्जरी वार्ड से सामने आए हैं। जहाँ गुमला के डुमरी प्रखंड स्थित सिकरी अंबा टोली निवासी सुनीता खाखा जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रही है। राजधानी का रिहायसी इलाका कहे जाने वाले अशोक नगर से दरिंदगी की दानवता सामने आयी है। पूर्व आईएएस महेश्वर पात्रा की पत्नी सीमा पात्रा पर सुनीता को प्रताड़ित करने का आरोप लगा है। सीमा पूर्व में भाजपा नेत्री भी थी, लेकिन इस घटना के बाद पार्टी से निष्कासित कर दी गयी हैं और उनके खिलाफ अरोगोड़ा थाना में प्राथमिकी दर्ज हुई है। सुनीता खाखा एक आदिवासी परिवार से आती हैं, इसलिए सीमा के खिलाफ एसटी–एससी एक्ट के तहत भी मामला दर्ज किया गया है।

प्रताड़ना की शिकार हुई सुनीता स्पष्ट बोल नहीं पा रही। यातनाओं से कराहती सुनीता चीख कर रो भी नहीं पा रही। अस्पताल के बेड पर लेट कर आपबीती सुनाती सुनीता की आँखों से आँसूओं के बूँद टपक पड़ते हैं। जिंदगी में आगे बढ़ने की उम्मीद लिए सुनिता अस्पताल के बेड पर अभी भी जिंदा है, हर पल वो बस इतना ही कहती है 'मैं ठीक हो जाऊँगी, तो आगे की पढ़ाई पूरी करूँगी।' इसी उम्मीद के साथ हर पल सुनीता अपनी साँसे गिन रही है और खुद को संभाल कर स्वस्थ होने का प्रयास कर रही है। इसके अलावा वो कहती हैं कि आयुष्मान भैया की वजह से ही वो जिंदा है। ये आयुष्मान और कोई नहीं, बल्कि आरोपी सीमा पात्रा के सुपुत्र हैं। जिन्होंने सुनीता की जान बचाई है।

हालांकि इस मामले में अरगोड़ा पुलिस और महिला थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोप सीमा पात्रा को उनके अशोक नगर स्थित आवास से गिरफ्तार कर लिया है।

जैसे उसके लिए हम मर रहे हैं, वैसी ही सजा उसे भी हो : अंकिता

23 अगस्त की उस रात को अंकिता के परिजन शायद ही भूल पाएंगे, जब खिड़की के बाहर से अंकिता के कमरे में शाहरूख नामक शख्स ने छोटू के साथ मिलकर पेट्रोल फेंककर आग लगा दी थी। ये हम नहीं कह रहे, बल्कि रिम्स में अंतिम साँस लेने से पहले गुमला के जेरुआडीह की बेटी अंकिता सिंह ने कहा था। अंकिता ने अपने बयान में यह भी कहा था कि जिस तरह से वो शाहरूख के लिए मर रही है, वैसी ही सजा शाहरूख को भी हो।

इस वारदात की जितनी भी निंदा की जाए, वो कम होगी। क्योंकि अंकिता के बेडरूम की तस्वीरें देखते ही कलेजा छलनी हो जाता है। बेड पर पड़ी काली चादर या फिर पूरा बेड जला हुआ नजर आ रहा है। इससे इसका अंदाजा तो सहज ही लगाया जा सकता है कि अंकिता को कितनी तकलीफ हुई होगी, क्योंकि हम थोड़ा–सा जलते हैं, तो वो असहनीय हो जाता है। यहाँ तो अंकिता के पूरे शरीर को जला दिया गया। सोचिए अंकिता पर क्या गुजरी होगी और रिम्स में अंतिम सांसें गिनते समय अंकिता ने सिर्फ यही कहा कि जो उसपर गुजर रहा है, वैसा ही उसके इस वारदात को अंजाम देने वाले के साथ भी हो। 16 साल की अंकिता जिस शाहरुख का नाम ले रही है, उसपर आरोप है कि वो अंकिता को शादी के लिए परेशान किया करता था, लेकिन शादी के लिए मना करने के बाद शाहरुख ने छोटू के साथ इस जघन्य अपराध को अंजाम दिया। हालांकि पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। लेकिन सवाल ये उठता है कि **ऐसे वारदात आखिर कब तक?**

जागरूकता के अभाव में हो रहे वारदात

समाज के लोग अक्सर ऐसे मामले को राजनीतिक परिदृश्य से जोड़कर देखते हैं। लेकिन हकीकत इससे परे नजर आती है। जो कि पूरी तरह इंसान के दिमाग और उसकी मानसिक क्षमता पर निर्भर करती है। एक ओर लोग इसका मुख्य कारण समाज में शिक्षा का अभाव बताते हैं, वहीं एक शिक्षित वर्ग जब ऐसी घटनाओं को अंजाम देता है, तो उसे मानसिक विकृति या फिर रूढिवादी सोच का नतीजा कहा जा सकता है। भारत को आजाद हुए 75 साल हो चुके हैं, लेकिन चंद लोग आज भी मानसिक रूप से गुलाम बने हुए हैं। जिसका नतीजा है कि हम सभ्य समाज में ऐसी घटनाओं को देख रहे हैं।

राज्य का शासन

राज्य के शांति व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारी शासकों की होती हैं। जिन्हें लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रणाली के जरिए राज्य की जनता ने अपना सिरमौर बनाया है। राज्य की जनता इन्हीं शासकों को अपना अभिभावक और मार्गदर्शक मानती है। इसलिए शासकों का पहला कर्तव्य राज्य के नागरिकों की रक्षा और सुरक्षा होनी चाहिए। अपराध और आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए सफल रणनीतियां बनायी जानी चाहिए। केवल महिला हेल्पलाइन 181 की स्थापना भर से समाज में जागरूकता नहीं फैलेगी, बल्कि राहत और सहायता उपलब्ध कराने वाले ऐसे हेल्पलाइन नंबरों के संबंध में ग्रामीण स्तर तक जागरूकता अभियान चलानी होगी।

लॉ एंड ऑर्डर

हर राज्य में कानून व्यवस्था होती है। पुलिस सेवा में लगे कर्मचारियों का यह दायित्व बनता है कि वे अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले क्षेत्रों में समय–समय पर जागरूकता अभियान चलाएं। अधिक से अधिक लोगों को सकारात्मक कामों से जोड़ें। विभागीय सहायता संपर्क सूत्र के संबंध में ग्राम स्तर पर जानकारी दें। ताकि जो आपराधिक घटनाएं समाज में घट रही हैं, उनपर अंकुश लग सके और राज्यवासी दिन हो या रात, हर वक्त चौन की सांस ले सकें।

महंगाई छीन रही लोगों की मुस्कुराहट

आलोक मिश्र,संवाददाता

रांची : मनुष्य को जीवन–यापन के लिए मुख्य रूप से तीन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती करनी होती हैं। जो कि रोटी, कपड़ा और मकान है। भारतवर्ष के जनसंख्या के मुताबिक इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति शत प्रतिशत नहीं हो पाती है। लोगों को दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए अलग–अलग तरकीब लगाने पड़ रहे हैं। कोई

फुटपाथ पर ठेला लगा रहे हैं, तो कोई शिक्षक की भूमिका में नजर आ रहे हैं, कोई दफ्तरों में हाजिरी लगा रहे हैं, तो कोई दुकान में बैठकर चावल, दाल और आटा बेचते नजर आ रहे हैं। क्योंकि उन्हें अपने और अपने परिवार के पेट की चिंता है, उन्हें खुद को और परिजनों को सुरक्षित परिवेश देना है। इसलिए दिन–रात मेहनत कर दो रुपए कमाते हैं। लेकिन महंगाई ने लोगों को इस कदर अपने आगोश में जकड़ रखा है, मानो किसी दुश्मन से कम नहीं।

मूल्य वृद्धि या महंगाई सबसे बड़ी आर्थिक समस्या है। जो कि सीधे तौर पर घर के बजट को बिगाड़ने का काम करती है। इस पर यह कहावत बिल्कुल सटिक बैठता है– 'आमदनी अट्ठनी,खर्चा रुपैया'। याने कि हमारी आमदनी पूर्व की तरह सीमित है। लेकिन सरकार बार–बार ऐसे हथकंडे अपना रही है, जिससे आय से अधिक व्यय हो रहा है, कुछ लोगों की स्थिति ऐसी हो गयी है कि कर्ज लेकर घर चलाना पड़ रहा है। क्योंकि लोगों को केवल महंगाई ने नहीं मारा, बल्कि वैश्विक महामारी कोरोना ने भी लोगों की कमर तोड़ दी है।

महंगाई बनी घरेलू कलह का कारण

एक परिवार में कम से कम चार लोग निवास करते हैं। चलिए मान लेते हैं कि उस परिवार का मासिक आय महज 15 हजार रुपए है। घर में कमाने वाला सदस्य सिर्फ एक, जो कि किसी छोटे से शहर में किराए के मकान में निवास करते हैं। उन्हें सबसे पहले रोटी की आवश्यकता होती है, एक माह के राशन की बात करें, तो प्रति व्यक्ति कम से कम एक हजार रुपए पड़ेगा। कुल मिलाकर चार हजार रुपए सिर्फ खाद्यान्न पदार्थ के, मकान का किराया ढाई हजार रुपए, बच्चों के स्कूल किट में तीन हजार रुपए, कपड़े में कम से कम दो हजार रुपए खर्च, ईलाज में दो हजार रुपए खर्च, फल–फूल में दो हजार रुपए खर्च। इन सभी का योग पंद्रह हजार, पांच सौ रुपए है। इसका साफ अर्थ है कि चादर से अधिक लोगों को पांव पसारने की नौबत आ गयी है। जिसके कारण घरेलू कलह होना लाजमी है। बाकी घरेलू कलह का परिणाम तो आप जानते ही हैं।

भारत की आर्थिक नीतियों की विफलता

बढ़ती हुई महंगाई भारत सरकार की आर्थिक नीतियों की विफलता का परिणाम है। प्रकृति के रोष और प्रकोप का फल नहीं, शासकों की बदनीयती और बद इंतजामी की मुँह बोलती तस्वीर है। काला धन, तस्करी और जमाखोरी महंगाई वृद्धि के परम मित्र हैं। तस्कर खुले आम व्यापार कर रहे हैं। काला धन जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है। काले धन की गिरफ्त में देश के बड़े नेताओं से लेकर उद्योगपति और अधिकारी तक शामिल हैं। काले धन का सबसे बुरा असर मुद्रास्फीति और रोजगार के अवसरों पर पड़ता है। यह उत्पादन और रोजगार की संभावना को कम कर देता है और दाम बढ़ा देता ।

बढ़ती महंगाई के प्रमुख कारण

महंगाई वृद्धि के अनेक कारणों में आर्थिक कारण मुख्य है। आर्थिक कारणों के साथ–साथ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक कारण भी महंगाई बढ़ाने में सहायक नजर आ रहे हैं। जो इस प्रकार हैं –

1. सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों ही महंगाई बढ़ाने में लगे हुए हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र में सभी उपक्रम घाटे में चल रहे हैं, जिसके कारण उत्पादन प्रभावित हो है और मूल्यवृद्धि हो रही है। निजी क्षेत्र निरन्तर घाटे की बात कहकर लाभ कमाने में लगे हैं, जिससे महंगाई बढ़ती जा रही है।
2. जनसंख्या वृद्धि भी महंगाई बढ़ने का मुख्य कारण है। जितनी तेजी से जनसंख्या बढ़ती है, वस्तुओं का उत्पादन तथा सेवाओं के अवसर उतनी तेजी से नहीं बढ़ते। परिणामस्वरूप माँग की अपेक्षा आपूर्ति कम होने से मूल्य वृद्धि हो रही है।
3. लोकतंत्र में सबसे अधिक जरूरी वोट लेना है और लेकिन कई उम्मीदवार ऐसी हैं, जो नोट पर वोट खरीदने की कोशिश करती नजर आती हैं। किसी भी दल की सरकार बने, उसे पूँजीपतियों के व्यापारिक हितों का ध्यान रखना पड़ता है और पूँजीपति तब राजनीतिक दलों को दिए चन्दे के बदले मूल्य बढ़ाते हैं, तब सरकार अनदेखी करती है। इस तरह से राजनीतिक चन्दों के कारण भी मूल्यवृद्धि हो रही है।
4. कृषि उपज के लागत व्यय में वृद्धि होने से भी महंगाई बढ़ती है। कृषि के काम आने वाली वस्तुओं जैसे बीज, खाद, उर्वरक, कृषि यन्त्र आदि में मूल्यवृद्धि हुई है। जिससे कृषि उपज की लागत बढ़ी है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश वस्तुओं का मूल्य कृषि पदार्थों के मूल्य पर निर्भर करता है। इसलिए कृषि जन्य पदार्थों के मूल्य बढ़ने से अन्य वस्तुओं के भी दाम बढ़े हैं।
5. जमाखोरी मूल्य वृद्धि का मूल कारण है। केवल व्यापारी ही नहीं, जमींदार एवं मध्यम वर्ग के किसान भी कृषि उपज को गोदामों में भरकर रखने लगे हैं, जिससे मूल्यवृद्धि हो रही है। त्योहारों के आस–पास ये लोग समान की कीमत मन मुताबिक बढ़ाकर बेचते हैं।
6. मुद्रास्फीति होने पर भी मूल्यवृद्धि होती है। जब प्रचलन में मुद्रा का अधिक प्रसार होता है, तब जो वस्तु पहले एक रुपए में आते थे, वही महंगे दामों में खरीदने पड़ रहे हे।
7. यातायात के समुचित साधनों के अभाव में भी मूल्य बढ़ते जा रहे हैं। यातायात के साधन अपर्याप्त होने पर सामानों का एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवहन नहीं हो पाता और आपूर्ति कम होने पर मूल्य वृद्धि होती है।
8. हड़ताल और 'बन्द' के कारण जब उत्पादन रुक जाता है, तब आपूर्ति प्रभावित होती है। सूखा, बाढ़, भूकम्प, अग्निकांड जैसी दैवीय आपदाओं से और दंगे जैसी मानवजनित विपदाओं से भी सामानों की आपूर्ति बाधित होती है। जिसका सीधा असर उत्पादन मूल्य पर पड़ता है।
9. केन्द्र सरकार की ओर से विभिन्न उत्पादों में वस्तु एवं सेवा कर (ळैज) लगा दिया गया है। जिसके कारण खाद्य साग्रियों से लेकर लिखने तक के सामानों के दाम में बेतहासा बढ़ोतरी हुई है। जिसका सीधा असर आम लोगों पर हुआ है, लोग 40 रुपए प्रति किलोग्राम चावल खरीदने को मजबूर हैं। जिन खाद्य सामग्रियों का दाम महज पांच रुपए हुआ करता था, उन्हें बाजार से सात रुपए देकर खरीदना पड़ रहा है।

महंगाई रोकने के उपाय

महंगाई को रोकने का कोई मूल मंत्र तो नहीं है, लेकिन कुछ तरीके जरूर अपनाए जा सकते हैं, जिससे लोगों को सहुलियत होगी। मुख्य रूप से सब्जी और फल जैसे उत्पादों को घरों के छत पर या खाली पड़े जगह पर उपजाना होगा। जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान देना होगा, कृषि योग्य भूमि पर सिंचाई के लिए जल की समुचित व्यवस्था करनी होगी। तभी प्रचुर मात्रा में उत्पादन हो पाएगा और लोगों को सस्ते दर पर सामान उपलब्ध हो पाएगा। हालांकि महंगाई को लेकर सिर्फ अपने देश की अर्थव्यवस्था को कोसने से कुछ नहीं होगा। बल्कि वैश्विक आर्थिक परिदृश्य से तुलना करना भी जरूरी है। क्योंकि उत्पादों की मूल्य वृद्धि केवल भारत में ही नहीं हुई है, विदेशों में भी कुछ ऐसा ही हाल है। हालांकि केन्द्र और राज्य सरकार की बेहतर योजनाओं के निर्माण से उत्पादन हो सकता है, भारी मात्रा में उत्पादन होने से उत्पाद मूल्य में कमी आएगी।

'इवेंट एंकरिंग' का बढ़ता क्रेज

आकाश सरोज,
विशेष संपादक

इन दिनों युवाओं पर ऐसे करियर की खुमारी चढ़ी है, जिसपर उन्हें नेम मिले, फेम मिले और इसी चाह के साथ एक ग्लैमरस करियर के सपने देखते हैं. इसी में 'इवेंट एंकरिंग' एक ऐसा करियर है, जो आपको नाम कमाने और खुद की पहचान बनाने में मदद कर सकता है। लेकिन कहा जाता है ना कि इस चकाचौंध वाले कैरियर को दूसरों को देखते हुए ना चुनें। इस कैरियर को अपनाने से पहले करियर की बारीकियां, करियर के भविष्य का आकलन और साथ ही खुद का आकलन भी बहुत जरूरी है। इवेंट एंकरिंग एक ऐसा करियर है, जिसकी कहीं पढ़ाई नहीं होती। यह पूरी तरह से आप पर ही निर्भर है। हालांकि करियर के बढ़ते क्रेज को देखते हुए आज कई कोर्स भी उपलब्ध हैं, जो इस करियर में बेहतर करने के लिए रामबाण साबित हो सकते हैं। उस कोर्स के बारे में हम आगे आपको बताएंगे, लेकिन उससे पहले हम जान लेते हैं कि इवेंट एंकरिंग जैसे करियर को अपनाने से पहले आपके अंदर किन–किन गुणों का होना जरूरी है।

आत्मविश्वास

यह एक ऐसा तीर है, जो अगर आपके पास है, तो कैसी भी कठिन परिस्थिति को आसानी से भेद सकते हैं। मंच पर भी कुछ ऐसा ही है। चूंकि जब आप मंच पर रहेंगे, तब कई सारी नजरें आप पर होंगी। आपको पूरे आत्मविश्वास के साथ कुछ ऐसा करना है कि सारी नजरें आप पर ही टिक जाएं। अगर आपने इतना कर लिया, तो फिर आपको एक अच्छा इवेंट एंकर बनने से कोई नहीं रोक सकता।

कम्यूनिकेशन स्किल

एक इवेंट एंकर बनने के लिए आपकी कम्यूनिकेशन स्किल मज़बूत होनी चाहिए। बेझिझक बोलने का तरीका और कैमरे के सामने बोलने का साहस होना चाहिए। आपके बोलने का अंदाज कुछ ऐसा होना चाहिए कि लोग खुद ब खुद आपकी ओर आकर्षित हो जाएं।

ये तो थे आपके अंदर की स्किल्स, जिसपर आपको खुद ही काम करना होगा। इसके अलावा हम आपको बाहरी चीजों के बारे में बताएंगे, जो आपको मंच संचालन के दौरान ध्यान रखना जरूरी है।

पर्सनालिटी

एक अच्छी पर्सनालिटी, सबका ध्यान आकर्षित करने पर मजबूर करती है। पर्सनालिटी किसी एक चीज के होने से नहीं बनती। इसमें कई चीजों का समावेश होता है। आपका चेहरा, पहनावा, बोलने का तरीका आदि। मंच पर जैसे ही आपकी एंट्री होती है, आपके दर्शक आपसे बिल्कुल अंजान होते हैं। सबकी निगाहें आप पर टिकी होती है। इस मोबाइल फोन के जमाने में कई कैमरा लेंस का फोकस आप पर होगा। ऐसे में आपको अपनी पर्सनालिटी पर काम करना होगा, ताकि लोगों की नज़रें आप पर से हटे ही ना और लोग आपको सुनना–देखना पसंद करें।

पहनावा

इवेंट कई प्रकार हो सकते हैं, जहां आपको एंकरिंग करनी पड़ सकती है। शादी–पार्टी की एंकरिंग, कॉर्पोरेट एंकरिंग, कल्चरल एंकरिंग, आउटडोर एंकरिंग, इंटरटेनमेंट एंकरिंग, स्पोर्ट्स एंकरिंग आदि। तो इवेंट के हिसाब से ही पहनावा के साथ खुद को तैयार करना होगा। क्योंकि इवेंट के हिसाब से उसी तरह के दर्शक वहां मौजूद होते हैं। अगर आप किसी कल्चरल इवेंट में जा रहे हैं, तो आपको वेस्टर्न ड्रेस पहनने के बजाय कल्चरल ड्रेस ही पहनना चाहिए। अगर आप किसी कॉरपोरेट इवेंट में एंकरिंग करने जा रहे हैं, तो आपको पूरे सूट–बूट में जाना होगा, ना कि कोई कल्चरल ड्रेस पहन कर। इसलिए आपको लेटेस्ट फैशन ट्रेंड, मेकअप ट्रेंड के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए।

क्षेत्रीय भाषा की जानकारी

इवेंट एंकरिंग में हिन्दी–अंग्रेज़ी तो ज़रूरी है ही, आपके पास कई क्षेत्रीय भाषाओं का भी ज्ञान होना चाहिए। हम भारत की ही बात करते हैं। भारत में कई राज्य हैं और यहां कई तरह की भाषाएँ बोली जाती हैं। ऐसे में आप किसी भी राज्य में एंकरिंग करने जाएंगे, तो आपको उस राज्य में बोली जाने वाली भाषा की जानकारी होनी चाहिए। क्योंकि वहां दर्शकों में भारी तादाद में लोग उसी भाषा को सुनना पसंद करेंगे। अगर आप उन्हीं की भाषा में एंकरिंग करेंगे, तो दर्शक आपसे अलग सा जुड़ाव महसूस करेंगे।

कैमरा फ्रेंडली होना

आप खुद भी कई ऐसे लोगों को देख सकते हैं, जिनकी कम्यूनिकेशन स्किल बहुत अच्छी है। लेकिन, कैमरा के सामने वो घबरा जाते हैं। इवेंट एंकरिंग अलग है। आज हर किसी के पास स्मार्टफोन है। जब आप किसी इवेंट को होस्ट कर रहे होंगे, सभी स्मार्टफोन के कैमरे का फोकस आप पर होगा। इसलिए आपको कैमरा फ्रेंडली होना जरूरी है। कैमरा ऑन होते ही आपका जोश और भी बढ़ जाना चाहिए, ना कि घबराहट।

नॉलेज

नॉलेज की कोई सीमा नहीं है। अगर आप समसामयिक विषयों पर जानकारी रखने में इंट्रेस्ट रखते हैं, तो एक बेहतर इवेंट एंकर बनने में आपको सहयोग मिलेगा। मंच संचालन के दौरान आप मनोरंजन के साथ–साथ अपने दर्शकों को कई जानकारियां भी दे सकते हैं। इसके लिए आपको किताबें, प्रेस नोट्स, मैगजीन आदि को खुद का दोस्त बनाना होगा।

स्क्रिप्ट राइटिंग

एक इवेंट एंकर को स्क्रिप्ट राइटिंग तो आनी ही चाहिए। क्योंकि मंच पर जाने से पहले आपको इवेंट के हिसाब से तैयारी करनी ही पड़ेगी और इसके लिए आपको स्क्रिप्ट लिखनी पड़ती है। सारी चीजें आप एकाएक मंच पर नहीं बोल सकते। इसके लिए आपको स्क्रिप्ट पहले से तैयार करनी होगी।

शायराना अंदाज

एक इवेंट एंकर को शायराना अंदाज वाला जरूर होना जरूरी है। अगर मंच पर आप इस शायराना अंदाज को बयां करते हैं, तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि कैमरे का फोकस आप पर से हटेगा। इसलिए एंकरिंग के बीच में शायरियों के तड़के लगाते रहने चाहिए। ताकि लोगों का जुड़ाव लंबे समय तक बना रहे। अगर आपकी पर्सनालिटी ही शायरों वाली है, तो फिर तो सोने पे सुहागा। नहीं तो इसे आपको पहले से तैयारी करनी पड़ेगी।

टीम वर्क

भले ही आप अकेले किसी इवेंट में दर्शकों को रिझा सकते हों, लेकिन टीम वर्क के महत्व को भी समझना बहुत जरूरी है। हो सकता है आपको कभी दो या तीन लोगों के साथ एंकरिंग करनी पड़ जाए। तो इसके लिए भी आपके अंदर सहयोग और समन्वय की भावना का होना बेहद जरूरी है।

हालांकि इवेंट एंकरिंग के लिए कोई खास कोर्स तो उपलब्ध नहीं है, लेकिन, 'मास कम्यूनिकेशन' एक ऐसा कोर्स है। जिसकी पढ़ाई कर आप कम से कम एंकरिंग की बारीकियों से रुबरू हो सकते हैं। इस कोर्स में आपको एंकरिंग की सारी तकनीकी पहलुओं से अवगत कराया जाएगा। चूंकि इवेंट एंकरिंग तो एक अलग क्षेत्र हो जाता है, लेकिन मास कम्यूनिकेशन में आप बहुत हद तक टेक्निकल जानकारियां हासिल कर सकते हैं, जो कि मंच पर रामबाण साबित होगा। एंकरिंग के क्षेत्र में बढ़ते क्रेज को देखते हुए आज देश के लगभग हरेक केंद्रीय और राज्य स्तर के विश्वविद्यालयों में इसकी पढ़ाई शुरू हो चुकी है। जहां सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ–साथ पीएचडी स्तर तक की पढ़ाई उपलब्ध है। तो डर कैसा? अगर आपके अंदर संवाद संप्रेषण और वाचन कौशल की क्षमता, लोगों का ध्यान आकर्षित करने का गुण, लोगों को सुनने–सुनाने का धैर्य, मंच पर जाने के बाद दर्शकों के बीच भाव विभोर का माहौल उत्पन्न करने की क्षमता, अपने शायराना अंदाज से लोगों को हंसाने की क्षमता आदि है, तो आप एक इवेंट एंकर बन जाइए। इसमें नेम–फेम तो है ही, साथ ही साथ आय भी अधिक है। एक और बात, शौकिया तौर पर इसे आप पार्ट टाइम भी कर सकते हैं। अगर आपको लगता है कि आपके अंदर क्षमता है, तो इवेंट एंकरिंग आपको जरूर करनी चाहिए। आज की तारीख़ में कई तरह के अवसर उपलब्ध हैं।

देश में भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा, लड़ते रहेंगे लड़ाई

राँची : देश में भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा रहा है। आरपीआई आंबेडकर भ्रष्टाचार मुक्त भारत की लड़ाई शुरू से लड़ती रही है। यही कारण है कि आरपीआई आंबेडकर के कार्यकारी अध्यक्ष राकेश राय झारखंड के सुदूर इलाकों में जाकर लोगों को भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक करने का काम करते हैं। राकेश राय बताते हैं भारत में भ्रष्टाचार चर्चा और आन्दोलनों का एक प्रमुख विषय रहा है। स्वतंत्रता के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार के दलदल में धंसा नजर आने लगा था और उस समय संसद में इस बात पर बहस भी होती थी। 21 दिसम्बर 1963 को भारत में भ्रष्टाचार के खात्मे पर संसद में हुई, बहस में डॉ राममनोहर लोहिया ने जो भाषण दिया था वह आज भी प्रासंगिक है। उस वक्त डॉ लोहिया ने कहा था सिंहासन और व्यापार के बीच संबंध भारत में जितना दूषित, भ्रष्ट और बेईमान हो गया है उतना दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं हुआ है।

2005 में भारत में ट्रांसपिरेंसी इंटरनेशनल नामक एक संस्था द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि 62 प्रतिशत से अधिक भारतवासियों को सरकारी कार्यालयों में अपना काम करवाने के

लिये रिश्वत या ऊँचे दर्ज़े के प्रभाव का प्रयोग करना पड़ा। वर्ष 2008 में पेश की गयी इसी संस्था की रिपोर्ट ने बताया है कि भारत में लगभग 20 करोड़ की रिश्वत अलग–अलग लोकसेवकों को (जिसमें न्यायिक सेवा के लोग भी शामिल हैं) दी जाती है। उन्हीं का यह निष्कर्ष है कि भारत में पुलिस कर एकत्र करने वाले विभागों में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार है। आज यह कटु सत्य है कि किसी भी शहर के नगर निगम में रिश्वत दिये बगैर कोई मकान बनाने की अनुमति नहीं मिलती। इसी प्रकार सामान्य व्यक्ति भी यह मानकर चलता है कि किसी भी सरकारी महकमे में पैसा दिये बगैर गाड़ी नहीं चलती। भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो।

किसी को निर्णय लेने का अधिकार मिलता है तो वह एक या दूसरे पक्ष में निर्णय ले सकता है। यह उसका विवेकाधिकार है और एक सफल लोकतन्त्र का लक्षण भी है। परन्तु जब यह विवेकाधिकार वस्तुपरक न होकर दूसरे कारणों के आधार पर इस्तेमाल किया जाता है तब यह भ्रष्टाचार की श्रेणी में आ जाता है अथवा इसे करने वाला व्यक्ति भ्रष्ट कहलाता है। किसी निर्णय को जब कोई शासकीय अधिकारी धन पर अथवा अन्य किसी लालच के कारण करता है तो वह भ्रष्टाचार कहलाता है। भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में हाल ही के वर्षों में जागरुकता बहुत बढ़ी है। जिसके कारण भ्रष्टाचार विरोधी अधिनियम –1988, सिटीजन चार्टर, सूचना का अधिकार अधिनियम – 2005, कमीशन ऑफ इन्क्वायरी एक्ट आदि बनाने के लिये भारत सरकार बाध्य हुई है।

राकेश राय ने कहा मेरा जीवन का एक ही लक्ष्य है देश से भ्रष्टाचार को दूर करना। इसके लिए आरपीआई लड़ने को तैयार है। जन जागरूकता का कार्य चल रहा है।

नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में लोकतंत्र हुआ प्रभावित : अनिता यादव

रांची : राजद प्रदेश प्रवक्ता अनिता यादव झारखंड में सकारात्मक राजनीति करने के लिए विख्यात हैं। लोकतंत्र की रक्षा के लिए अनिता यादव ने कई जन आंदोलन भी किया। उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान लोकतंत्र विषय पर अपनी विचारों को रखा। उन्होंने कहा लोकतंत्र यानि डेमोक्रेसी का अर्थ यह है कि जब भी कभी किसी राष्ट्र में सरकार का चयन होता है तो वह लोगों के द्वारा लोगों के लिए चुनी जाती है। किसी भी राष्ट्र में लोकतंत्र का गठन उसके संविधान के स्थापना के दौरान ही कर दी जाती है। लोकतंत्र को दुनियाभर में सबसे अच्छे शासन प्रणाली में शुमार है और इसी कारणवस लोकतान्त्रिक व्यवस्था आज अधिकतम देशों में लागू है। जब किसी भी देश में वहां के निवासी अर्थात जनता को वोट देने और अपने प्रत्याशी का सही चुनाव करने को मिल जाए तो ऐसे में उस देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था लागू हुई होती है।

आज सारे विश्व भी मे लोक तंत्र की अपनी अलग परिभाषा है इनमे सबसे सटीक और जटिल परिभाषा पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकलन द्वारा दी गयी लोकतंत्र की परिभाषा सबसे मान्य मालूम जान पड़ती है। लिंकलन के अनुसार जनता के द्वारा, जनता का शासन एवं जनता के लिए शासन ही प्रजातंत्र है। प्राचीन काल में शासन व्यवस्था काफी अधीन हुआ करती थी क्युंकि राजतंत्र होने के कारण जनता की भागीदारी ना बराबर थी और साथ ही साथ जनता को कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं थे। समय ढलने के कारण जनता अपने हक़ के लिए आवेदना की और पूरे विश्वभर में शासन व्यवस्था लागू हुई। इस व्यवस्था में ताकत किसी एक आदमी के पास न होकर जनता के पास होती है। लोकतंत्र की नींव इस विश्वभर में बहुत पहले ही स्थापित हो गयी थी परंतु कई कारणों से इसकी हानि भी होती आ रही है। लोकतंत्र का जन्म भारतवर्ष में हुआ था जहाँ प्राचीन जनपद में राजा और जनता के बीच चुनाव हुआ था। इसके अलावा प्राचीन यूरोप के कुछ देशों में संसद के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा हुआ करता था परंतु इन नियमों से राजा

वंछित रहता था। आधुनिक काल में लोकतंत्र की पूर्ण स्थापना अमेरिका के किसी राज्य में हुई। लोकतंत्र प्राचीन काल से ही भारत एवं यूरोप जैसे कई देशों में विध्यमान है। पिछले दो हज़ार वर्षों से लोकतंत्र का इतिहास ऊँच नीच होते रहा है। जब नागरिकों ने अपनी सोच से समाज निर्माण की स्थापना की जिसके चलते अधिक मात्रा में लोगों को भागीदारी का मौका मिला। विश्व के सबसे प्राचीन शहरों में शुमार एथेंस एक यूरोपीय देश की राजधानी है जहाँ लोकतंत्र पिछले 3000 सालों से स्थापित है। ऐसे ही भारत उपमहाद्वीपों का सबसे प्राचीन और बड़ा देश होने के कारण लोकतंत्र व्यवस्था पिछले 2000 सालों से स्थापित है। कई विद्रोह और युद्ध के कारण ब्रिटिश सरकार ने इसकी इमारत गिरा दी परंतु 1947 में आज़ादी के बाद इसकी पुनः स्थापना की गई। आज भारत दुनिया का सबसे विशाल लोकतांत्रिक देश है जहाँ हित एक आदमी के हाथों में न होकर पूरी जनता के हाथों में है। हांलकि जब से देश मे नरेंद्र मोदी की सरकार आयी है लोकतंत्र के अनुशासन को भंग किया जा रहा है। बीजेपी की ओर से लोकतंत्र का हत्या करने का कार्य किया जा रहा है। ऐसे समय मे जरूरत है आम जनता को मिलकर लड़ाई लड़ने की।

झार न्यूज मे विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
7717748632

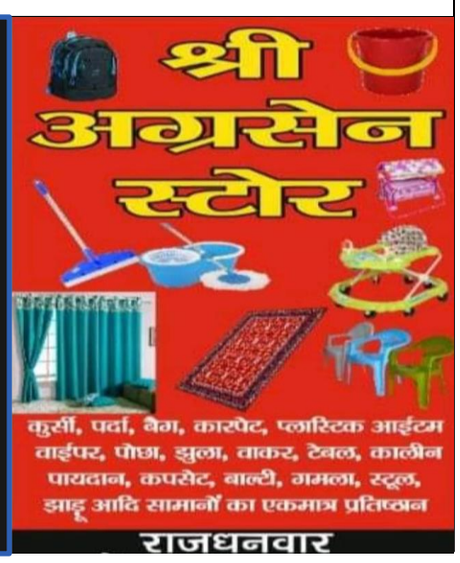

जो आँखें नहीं देख पाती, वो देख लेता है कैमरा

प्रणय प्रबोध, रांची

रांची : हमारे मन में कई बार यह सवाल आता है कि जब खुली आँखों से सबकुछ साफ–साफ दिख ही जाता है, तो फिर कैमरे की क्या जरूरत? हम खुली आँखों से देख तो सकते हैं, लेकिन सबकुछ देखना संभव नहीं। क्योंकि हमारी आँखें एक निश्चित दूरी के वस्तुओं को ही देख पाती है। इसके अलावा हम अपने पीछे की वस्तुओं को पूरा गर्दन घूमाकर नहीं देख सकते। अगर दृश्य को देख भी लें, तो बहुत अधिक दिन तक वो हमें याद नहीं रहता।

इस भाग दौड़ भरे जीवन से थोड़ा समय निकालकर लोग अपनों के साथ बिताना चाहते हैं। इस समय को लोग अपनी आँखों में कैद करना चाहते हैं। लेकिन यादों को ताजा करने के लिए बार–बार उस दृश्य को देखना भी जरूरी होता है। जो कि मनुष्य की आंखें नहीं कर पाती। यादों को ताजा करने और दूसरों को उस दृश्य को महसूस कराने के लिए तकनीक का सहारा लेना पड़ा। इसी सोच के साथ वैज्ञानिक जोहन जॉन ने सन् 1685 में कैमरे का आविष्कार किया।

कैमरे का आगमन

कैमरा सबसे पहले कैमरा ऑब्स्क्योरा के रूप में सामने आया। इसका आविष्कार ईराकी वैज्ञानिक इब्न–अल–हज़ेन ने सन् 1015 से 1021 के बीच किया। इसके बाद अंग्रेज वैज्ञानिक रॉबर्ट बॉयल और उनके सहायक रॉबर्ट हुक ने सन् 1660 के दशक में पोर्टेबल कैमरा विकसित किया। सन् 1685 में जोहन जॉन ने एक ऐसा कैमरा विकसित किया, जो सुबाह्य था और तस्वीरें खींचने के लिए व्यवहारिक थी।

पत्रकारिता के क्षेत्र में कैमरे की भूमिका

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। पत्रकारिता और कैमरे को सहयात्री कहा जा सकता है। क्योंकि वर्तमान समय में कैमरे के बिना पत्रकारिता संभव नहीं। हम अपनी आँखों से जो देखते हैं, उसे दूसरों को दिखा पाना संभव नहीं, या यूँ कहें कि जिस दृश्य को हमने जिस रूप में देखा, उस दृश्य की व्याख्या कोई और किसी दूसरे रूप में भी कर सकता है। लेकिन छवि का निर्माण होगा, तभी तो लोग दृश्य की व्याख्या कर पाएंगे। खबरनवीस जबतक खबरों को लिखेंगे, उससे पहले कोई और उसकी व्याख्या कर चुका होगा। इसके अलावा सभी सारगर्भित बातें उस खबर में हो, यह भी जरूरी नहीं। लेकिन छायाकार ने जो छवि कैमरे के जरिए उतारी है, वह समाचार निर्माण में सहायक होगी।

एक छायाचित्र 1000 शब्दों के निर्माण में सहायक

ऐसा माना जाता है कि एक छायाचित्र की क्षमता 1000 शब्दों के बराबर है। क्योंकि कलमकार जो कुछ अपनी कलम से नहीं लिख पाते, वो एक छायाचित्र के जरिए प्रस्तुत कर सकते हैं। जहां एक ओर तस्वीर खींचने के लिए तकनीकी कौशल का होना जरूरी है। वहीं दूसरी ओर फ्रेम बनाने के लिए छायाकार का कलात्मक होना भी जरूरी है। क्योंकि तस्वीरें बहुत कुछ कहती हैं और तस्वीरों से ही तथ्यों का जुड़ाव है।

जो हम देख न पाते खुली आँखों से,
उस छवि को यह दिखलाता है।
वर्तमान को खुद में समेट कर,
इतिहास का हिस्सा बनाता है।।

तीसरी आँख और 360 डिग्री वाला गर्दन

हम अपने गर्दन को महज 180 डिग्री तक घुमा सकते हैं। हमारी आँखें भी उसी ऐंगल में देख पाती हैं, जिस ऐंगल में गर्दन घुमता है। लेकिन कैमरे की नजरें वहाँ तक जाती हैं, जहाँ तक उसके लेंस की क्षमता हो। हम जिन चीजों को खुली आँखों से नहीं देख पाते, उन्हें यह कैमरा अपनी लेंस की मदद से देख लेता है। हम जिस ओर अपनी गर्दन नहीं घुमा पाते, उस ओर मुड़कर यह छायाचित्र बटोर लेता है।

यादों के पिटारे का साथी है कैमरा

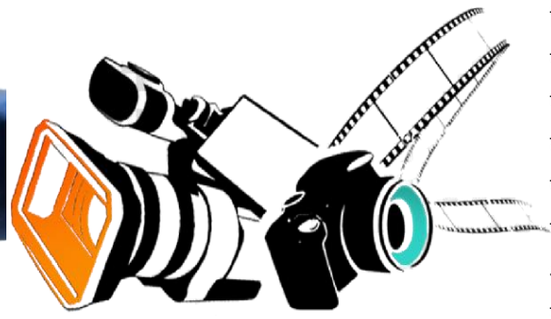

हम अपने व्यक्तिगत जीवन में जो कुछ भी करते हैं, उन्हें संजोना चाहते हैं। चाहे वह शब्दों के रूप में हो, यादों के रूप में या फिर छवि के रूप में। वर्तमान समय में सबसे सुलभ साधन के रूप में हमारे हाँथ में मोबाइल फोन है। जिसमें एक से एक बेहतरीन फीचर के साथ कैमरे हैं। इन कैमरों का हम अपने जीवन में सबसे अधिक उपयोग कर रहे हैं। चाहे वह कोई भी मोमेंट क्यों ना हो, हम तस्वीरें लेना नहीं भूलते, क्योंकि हम उन्हें अपनी यादों के पिटारे का साथी बनाना चाहते हैं। जिसमें कैमरा सबसे अधिक मददगार साबित हो रहा है।

कैमरे की नजर

पत्रकारों का सहयात्री कहा जाने वाले कैमरे को तीसरी नजर की संज्ञा दी गयी है। क्योंकि यह लोकतंत्र के तीनों स्तंभों पर नजर रखता है। लोकतंत्र के तीन स्तंभ न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका हैं। जिनपर कैमरा पैनी नजर बनाए रखता है और छवि के जरिए सच्चाई को जनमानस के सामने प्रदर्शित करता है। कैमरे के सहयोग से कई ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनके खुलासे से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खलबली मच गयी है। कैमरे की मदद से ही हम देश के अंदर चल रही गतिविधियों के बारे में जान पाते हैं, इसके अलावा विश्व स्तर पर क्या कुछ घटित हो रहा है, इसकी जानकारी भी हमें छवि या चलचित्र के जरिए मिलती है। जिसमें कैमरे का सबसे बड़ा योगदान है। इस कैमरे ने न जानें कितने ऐसे राज खोले हैं, जिससे सियासत गर्म हुआ है और सल्तनत ढह गया है।

कैमरा और करियर

हम अक्सर कुछ क्रिएटिव करने का सोचते हैं, किसी ऐसे प्रोफेशन को चुनना पसंद करते हैं, जो हमारा पैसन भी हो। फोटोग्राफी उनमें से एक है। जिसे लगभग सभी लोग पसंद करते हैं, लेकिन पैसन के रूप में अपनाने वाले लोग जबतक स्कील्ड नहीं बनेंगे, तबतक इसे प्रोफेशन बनाना मुश्किल है। वर्तमान समय में फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी की मांग बहुत अधिक बढ़ गयी है। चाहे वह विज्ञापन के क्षेत्र में हो या फिर फैशन फोटोग्राफी शूट, चाहे वह ऑफिसियल ऑकेजन हो या फिर घर में ब्याह, हर जगह कैमरापर्सन का डिमांड है। इसके अलावा पत्रकारिता के क्षेत्र में कैमरापर्सन्स का डिमांड सबसे अधिक है। लेकिन जितने स्किल्ड लोगों की मांग मार्केट में हैं, उनमें से महज दस प्रतिशत लोग ही स्किल्ड मिल पा रहे हैं। जो स्किल्ड हैं, उनका मार्केट में डिमांड भी अधिक है।

आसान नहीं था कैमरे का सफर

कैमरा आज के दौर में छोटा–सा उपकरण बन गया है। लेकिन इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो कैमरे का सफर इतना भी आसान नहीं लगेगा, जितना की आज हम उसे पॉकेट में लेकर चलते हैं। 'एग्फा' शुरुआती दौर का कैमरा माना जाता है, जो कि बक्से के आकार का और काफी बड़ा था। जिसका उपयोग बंद कमरे में ही किया जा सकता था। उस समय रंगीन छवि नहीं निकाली जा सकती थी, बल्कि उस जमान के प्रिंटिंग तकनीक का प्रयोग कर ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें निकाली जाती थी। फिर आया 'पोलरायर लैण्ड कैमरा', जिसका प्रयोग प्रकाश वाले स्थान में भी किया जा सकता था और छवि बिल्कुल साफ उतरकर आती थी। इसके बाद शुरुआत हुई मॉर्डन कैमरों की। जिसमें सबसे पहले याशिका 35 मिमी एसएलआर आया। अब डीएसएलआर, एचडी सहित कई अत्याधुनिक कैमरे बाजार में उपलब्ध हैं।

युवा अगर चाह ले, तो असंभव को भी संभव कर सकता है : गौरीशंकर यादव

विशाल भारद्वाज, रांची

रांची : राजद खटाल प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष गौरीशंकर यादव झारखंड में युवाओं के लिए मिशाल बन चुके हैं। आज हर एक युवा उनसे जुड़ने के लिए लालायित है। गौरीशंकर यादव झारखंड के कई क्षेत्रों में जाकर युवाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य कर रहे हैं। गौरीशंकर यादव कहते हैं कि सब जानते हैं कि भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। आज भारत में दूसरे देशों से सबसे ज्यादा युवा बसते हैं। युवा वर्ग वह वर्ग होता है जिसमें 14 वर्ष से लेकर 40 वर्ष तक के लोग शामिल होते हैं। आज भारत देश में इस आयु के लोग सबसे बड़ी संख्या में मौजूद है। यह एक ऐसा वर्ग है जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबसे ज्यादा ताकतवर है। जो देश और अपने परिवार के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न करते हैं। आज भारत देश में 75: युवा पढ़ना लिखना जानता है।आज भारत ने अन्य देशों की तुलना में अच्छी खासी प्रगति की है। इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का है। आज भारत का हर युवा अच्छी से अच्छी शिक्षा पा रहा है। इसी कारण मैं युवाओं के लिए कार्य कर रहा हूँ।

आज उन्हें पर्याप्त रोजगार के अवसर मिल रहे हैं परंतु दुख की बात यह है कि आज का युवा भले ही कितना ही पढ़ लिख गया हो परंतु अपने संस्कार व देश और परिवार के प्रति जिम्मेदारियों को दिन–प्रतिदिन भूलता ही जा रहा है। आज भारत का युवा वर्ग ऊंचाईयों को छूना चाहता है परंतु वह यह भूलता जा रहा है कि उन ऊंचाईयों को छूने के लिए वह स्वयं अपने जड़ें खुद काट रहा है। भारत का युवा वर्ग तैयार है एक नई युवा क्रांति के लिए। लेकिन अफसोस की बात है कि कुछ इस युवा वर्ग को रोक रही हैं। भारत का युवा वर्ग भारत में अपना योगदान देने की बजाय विदेशों में जाकर बस जाता है।

भारत की राजनीति में आज वृद्ध लोगों का

ही बोलबाला है और चंद गिने–चुने युवा ही राजनीति में है। इसका एक कारण यह है कि भारत में राजनीति का माहौल दिन–ब–दिन बिगड़ रहा है और सच्चे राजनीतिक लोगों की जगह सत्तालोलुप और धन के लालची लोगो ने ले ली है।

राजनीति में देश प्रेम की भावना की जगह परिवारवाद, जातिवाद और संप्रदाय ने ले ली है। आए दिन जिस तरह से नेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से बाहर आ रहे है देश के युवा वर्ग में राजनीति के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

अब भारत की राजनीति में सुभाषचन्द्र बोस, शहीद भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक जैसे युवा नेता आज नहीं है। जो अपने होश और जोश से युवा वर्ग के मन में एक नई क्रांति का संचार कर सके। लेकिन अफसोस आजादी के बाद नसीब में है यह बूढ़े नेता जो खुद की हिफाजत ठीक से नहीं कर सकते तो युवा को क्या देशभक्ति या क्रांति की बातें सिखाएंगे?

यही वजह है कि भारत के युवा अब इस देश को अपना न समझकर दूसरे देशो में अपना आशियाना खोज रहे हैं। वे यहां की राजनीतिक सत्ता और फैले हुए भ्रष्टाचार से दूर होना चाहते हैं। इसलिए वे कोई भी ठोस कदम उठाने से पहले कई–कई बार सोचते हैं। यहां तक कि भारत में वोट डालने वाले युवा को अपने चुने हुए उम्मीदवार पर तक भरोसा नहीं होता है। राजद सकारात्मक राजनीति करती है। राजद के राह पर चलकर ही देश के युवा हर क्षेत्र में विकास कर सकते हैं।

नारी शक्ति के बिना इस संसार में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता : शोभा यादव

विशाल भारद्वाज, रांची

रांची : बीजेपी नेत्री व राष्ट्रीय यादव सेना की कार्यकारी अध्यक्ष शोभा यादव समाज उत्थान को लेकर लगातार कार्य कर रही हैं। महिलाओं को सशक्त करना उनके जीवन का लक्ष्य है। वह बताती हैं कि हमारे समाज में महिला अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम किरदार निभाती है। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुणता दर्शाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिला पुरुष से पीछे खड़ी दिखाई देती है। पुरुष प्रधान समाज में महिला की योग्यता को आदमी से कम देखा जाता है। सरकार द्वारा जागरूकता फ़ैलाने वाले कई कार्यक्रम चलाने के बावजूद महिला की जिंदगी पुरुष की जिंदगी के मुक़ाबले काफी जटिल हो गयी है। महिला को अपनी जिंदगी का ख्याल तो रखना ही पड़ता है साथ में पूरे परिवार का ध्यान भी रखना पड़ता है। वह पूरी जिंदगी बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास, और दादी जैसे रिश्तों को ईमानदारी से निभाती है। इन सभी रिश्तों को निभाने के बाद भी वह पूरी शक्ति से नौकरी करती है ताकि अपना, परिवार का, और देश का भविष्य उज्जवल बना सके। अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करे तो यह तो साफ़ दिखता है की हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। महिलाएं नौकरी करने लगी है। घर के खर्चों में योगदान देने लगी है। कई क्षेत्रों में तो महिला पुरुषों से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लड़कियां ऐसे ऐसे कीर्तिमान बना रही है जिस पर न सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है।

महिलाओं के उत्थान में भारत सरकार भी पीछे नहीं है। बीते कुछ सालों में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएँ चलाई गयी है जो महिलाओं को सामाजिक बेड़ियाँ तोड़ने में मदद कर रही है तथा साथ ही साथ उन्हें आगे बढ़ने में प्रेरित कर रही है। सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ साथ उन पर क़ानूनन रोक

लगा दी है। जिनमें मुख्य थे बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज़ प्रथा, बाल मजदूरी, घरेलू हिंसा आदि। इन सभी को क़ानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधर आया है। महिला अपनी पूरी जिंदगी अलग अलग रिश्तों में खुद को बाँधकर दूसरों की भलाई के लिए काम करती है। हमने आज तक महिला को बहन, माँ, पत्नी, बेटी आदि विभिन्न रूपों में देखा है जो हर वक्त परिवार के मान सम्मान को बढ़ने के लिए तैयार रहती है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालात इतने ख़राब नहीं है पर ग्रामीण इलाकों में महिला की स्थिति चिन्ता करने योग्य है। सही शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं की दशा दयनीय हो गई है। एक औरत बच्चे को जन्म देती है और पूरी जिंदगी उस बच्चे के प्रति अपनी सारी जिम्मेदारियों को निभाती है। बदले में वह कुछ भी नही मांगती है और पूरी सहनशीलता के साथ बिना तर्क किये अपनी भूमिका को पूरा करती है। कई अवसरों पर देखा गया है की महिलाओं के साथ निम्न दर्जे का बर्ताव किया जाता है। उन्हें अपने दफ्तरों में भी बड़ी जिम्मेदारी देने से मना कर दिया जाता है। कई औरतें अपने साथ होते इस सुलूक को ही अपनी किस्मत मान लेती है और जो उनके साथ हो रहा है उसके साथ ही अपना जीवनयापन कर लेती है। पर सबके साथ ऐसा नहीं है। समाज में महिलाओं के कई ऐसे उदाहरण भी है जो छोटी उम्र की लड़कियों के लिए प्रेरणा है। इनमें ऐसी भी लड़कियाँ है जिनका खुद का परिवार ही उनका साथ देने को तैयार नहीं था पर उन्होंने अपने दम पर समाज की विचारधारा को बदल कर रख दिया। महिलाएं समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ब्रिघम यंग के द्वारा एक प्रसिद्ध कहावत है की 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे है तो आप सिर्फ एक आदमी को शिक्षित कर रहे है पर अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे है तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे है'। समाज के विकास के लिए यह बेहद जरुरी है की लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दे क्योंकि उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है। ब्रिघम यंग की बात को अगर सच माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा पर वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है। महिलाओं के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसे पागलपन ही कहा जाएगा की उनकी प्रतिभा को सिर्फ इसी तर्क पर नज़रअंदाज कर दिया जाए कि वे मर्द से कम ताकतवर तथा कम गुणवान है। भारत की लगभग आधी जनसँख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। अगर उनकी क्षमता पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसका साफ़ साफ़ मतलब है देश की आधी जनसँख्या अशिक्षित रह जाएगी और अगर महिलाएं ही पढ़ी लिखी नहीं होगी तो वह देश कभी प्रगति नहीं कर पाएगा। हमें यह बात समझनी होगी की अगर एक महिला अनपढ़ होते हुए भी घर इतना अच्छा संभाल लेती है तो पढ़ी लिखी महिला समाज और देश को कितनी अच्छी तरह से संभाल लेगी।

सदियों पुरानी अद्भुत व रहस्यमयी शिव मंदिर

ओम प्रकाश कुमार , राँची

राँची : झारखण्ड राज्य के रामगढ़ जिले के शहर से तक़रीबन 03 किलोमीटर दूर एनएच–23 रामगढ़– गोला मार्ग पर कैथा गांव में प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। इस प्राचीन शिव मंदिर का इतिहास लगभग 16वीं शताब्दी की बताई जाती है। इस मंदिर के बारे में ऐसा कहा जाता है कि रामगढ़ राज परिवार के दलेर सिंह बहुत बड़े शिवभक्त थे। इनके द्वारा ही इस गुफानुमा मंदिर को बनवाया गया था। दलेर सिंह का एक क़िला रामगढ़ में भी था, जो अभी राजागढ़ के नाम से जाना जाता है। मंदिर के समीप एक तालाब भी है, तो राजा महाराजाओं के काल में ही बनी थी। मंदिर के बेलनाकार गुंबद के ठीक निचले हिस्से में गुफा मार्ग है जो कूप के आकार में है। इसी गुफा से तालाब एवं राजागढ़ दामोदर नदी के किनारे लगभग तीन किलोमीटर राजा किला तक सुरंग बनी थी। इसी सुरंग से होकर रामगढ़ राजा व उनका परिवार मंदिर में पूजा– अर्चना के लिए जाया करते थे। स्थानीय लोगों का कहना है कि इसी गुफा के ठीक सामने अभी भी एक कमरा है। इस कमरे के लिए ना तो कोई द्वार है ना ही खिड़कियां हैं, कमरा पूरी तरह से बंद है। पता नहीं, इस कमरे के भीतर क्या है। आज तक पुरातत्व विभाग भी न जान सका। कुछ साल पहले चोरों ने चोरी के मंतव्य से छिद्र करने का प्रयास किया था, पर दीवार की मोटाई अधिक होने के कारण छिद्र संभव नहीं हो सका। दूसरी मंज़िल में स्थापित शिवलिंग के ठीक ऊपर बेलनाकार गुंबद के ऊपरी हिस्से में एक कूप आकार का गड्ढा बना हुआ है, जिसमें बारिश के दिनों में पानी संग्रह होती थी और पूरे साल शिवलिंग के ऊपर बूंद– बूंद का जलाभिषेक होता रहता था। वर्तमान में ये अद्भुत नजारा नहीं देखने को मिलता है।

16वीं शताब्दी में बने इस मंदिर की बनावट में स्थापत्य की अद्भुत कला देखने को मिलती है। इस दो मंजिले मंदिर के बेलनाकार गुंबद व उस काल के लखौरी ईंटो का प्रयोग व मंदिर का निर्माण अपने आप में एक अद्भुत कला है। मंदिर के पिछले हिस्से के एक कोने की दीवार में नीचे से ऊपर तक दरार पड़कर फट जाने के बाद भी मंदिर अभी तक सुरक्षित है। इससे इसकी मज़बूती का सहज ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है। मंदिर की बनावट को बारीकी से देखने से लगता है कि मंदिर के ऊपरी भाग में शिव मंदिर तो नीचे गुफानुमा फ़ौजी पोस्ट था। मंदिर के नीचे भाग के चारो ओर छोड़े गए छोटे– छोटे खिड़कीनुमा दीवार से तैनात राजा के सिपाही तीर– धनुष व अन्य हथियार के साथ तैनात रहते थे। इस मंदिर को भारत सरकार एवं पुरातत्व विभाग द्वारा राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया है। लेकिन, पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए पर्याप्त ज़मीन नहीं है। इसके बाद भी इस मंदिर की सत्यता को देखिए। मंदिर के दूसरी मंजिल में स्थापित शिवलिंग को दर्शन करने काफी दूर– दूर से पर्यटक आते हैं और पूजा– अर्चना कर अपनी सुरक्षित जीवन की मनोकामना करते हैं। झारखण्ड सरकार से निवेदन है कि जिस प्रकार से इस मंदिर को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया है, उसी प्रकार पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने के लिए पर्याप्त ज़मीन उपलब्ध किया जाय।

कविता

सहेजना

हम औरतें सहेजने का हुनर
खुद ब खुद सीख जाती हैं
बचपन की यादों को सहेज
मायके से विदा हो जाती हैं

जिंदगी के सुखद पलों को
दोस्तों संग बिताए किस्सों को
सहेजती किसी खजाने की तह में
नहीं होती है ऊब कभी हमें

पुरानी यादों में डूबने पर
घंटों खुद से खुद ही बातें करती
खुद की तलाश में विचरती हैं
पर सहेज न पाती है वह
अपनों से मिली उपेक्षा को
बेवजह के दिए उनकी पीड़ा को
उस दर्द को

असह्य हो निकल पड़ती जब
सैलाब आ जाता अश्कों का
तरती उबरती रहती उसमें
सहेज न पाती बिखरती बूंदों को

दिखा न पाती जख्म किसी को
खुद ही उसपर मरहम लगाती
ठीक हो जाता जख्म जब मरहम से
खुद ही खुद को सहेजती मैं

अर्चना तिवारी,
कवयित्री

कविता : कैमरा

जो देख न पाती खुली आँखें,
वो तू जो देख आता है।
तेरी खींची हुई तस्वीरों से,
इतिहास रच जाता है।।

तू गवाह है अतीत का,
तू वर्तमान का श्रृंगार है।
भविष्य तेरा उज्जवल है,
तू लोगों की पुकार है।।

कहानी निजी जीवन की हो,
या मौज का कोई दौर हो।
तू हर लम्हे का साथी है,
छायांकन तेरा श्रृंगार है।।

खबर जहां होती है,
तू वहां चला जाता है।
खबरदारों का सहारा बन,
तू उन्हें खबर दिलाता है।।

रंग बदलती दुनिया के साथ,
तूने भी बदलना सीख लिया।
पहले था ब्लैक एण्ड व्हाईट तू,
अब तेरा मिजाज रंगीन हुआ।।

चलो चलते हैं घूमने,
उन नजरों को चूमने।
जिसने तूझे देखना सिखाया,
उनके अनुभव से कुछ सीखने।।

जिसने तूझे समाज दिखाया,
उनकी आँखों को चलकर तू देख।
वक्त मिले जब कभी तूझे,
तो थोड़ा उन आँखों को सेंक।।

बंद कमरे में तड़पता,
वो एक इंसान है।
तू तो एक नाचीज़ है,
तेरा वो भगवान है।।

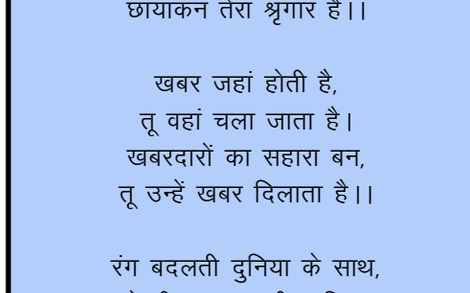

सोशल मीडिया बना आय का स्त्रोत

सौरभ कुमार, संवाददाता

राँची : 21वीं सदी को हम सूचना और प्रौद्योगिकी युग के रूप में जानते हैं। जहाँ हमारे दैनिक जीवन का सहयात्री सोशल मीडिया बन गया है। इन दिनों सोशल मीडिया का चलन इतना अधिक बढ़ गया है कि लोग इसे आय का श्रोत मानने लगे हैं। चाहे वह मेटा का कोई प्लेटफॉर्म हो, या फिर गूगल का। लोग दिन रात बेहतर से बेहतर कंटेट देने का प्रयास कर रहे हैं। ताकि अधिक से अधिक लोग उनके कंटेट को पसंद करें, देखें, शेयर करें और उसे इनकम का श्रोत बनाने में सफल हो सकें।

लाइक, सब्सक्राइब एंड शेयर से...

दिनभर में कई चौनल्स के लिंक आपके पास आते होंगे। जिसमें ये तीन शब्द तो जरूर लिखे होंगे, स्पाम, ॉनइेबतपइम ंदक ॅैंतम चसेंइ क्रिएटर ऐसे शब्दों का इस्तेमाल क्यों कर रहे हैं? इसकी खास वजह है कि वो शेयरिंग के जरिए अपने पोस्ट पर ट्रैफिक लाना चाह रहे हैं। कम समय में किसी भी तरह से प्लेटफॉर्म के कोरम को पूरा करना चाह रहे हैं। जिनका कंटेट बेहतर होता है, करंट सिचुएशन से जुड़ा होता है, प्रेजेंटेशन का तरीका बेहतर होता है, उन्हें सफलता जल्दी मिलती है। खासकर अधिकतर लोग यू–ट्यूब पर काम कर रहे हैं। क्योंकि वहाँ से कम समय में अच्छी आमदनी हो सकती है। स्थित ऐसी है कि वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर 37 मिलियन से भी अधिक यू–ट्यूब चौनल्स हैं। इनमें से कई लाख लोग केवल अर्निंग के लिए यू–ट्यूब का उपयोग कर रहे हैं।

मेटा

मेटा के भी कई प्रोग्राम्स आपके फोन में रन कर रहे होंगे। जिन्हें आय का श्रोत बनाया जा सकता है। चाहे वह लिक्डइन हो, इंस्टाग्राम हो या फिर फेसबुक और व्हाट्सअप। फेसबुक पर भी लोग रिल्स और वीडियो पोस्ट कर पैसे कमा रहे हैं। लेकिन फेसबुक की प्राइवेसी और मॉनिटाइजेशन पॉलिसी यू–ट्यूब से काफी अलग है। जिस गाने पर यू–ट्यूब कॉपीराइट नहीं लगाता, वैसे कई गानों पर फेसबुक कॉपीराइट लगाता है। इसलिए फेसबुक पर वीडियो डालने से पहले इसके सारे फीचर की गतिविधियों का जानना जरूरी है। इसके अलावा लोग इंस्टाग्राम पर भी रिल्स बनाकर पैसे कमा रहे हैं। व्हाट्सअप बिजनेस अकाउंट से भी लोग पैसे कमा रहे हैं।

गूगल

ऑनलाइन पैसे कमाने का सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म गूगल प्रोवाइड करता है। चाहे वह बल्क मैसेजिंग, बल्क मेल, ब्लॉगिंग या फिर एडवर्टाइजिंग ही क्यों न हो? कई तरह से कमाई का जरिया गूगल घर बैठे दे रहा है। बस जरूरत है, तो गूगल ऐड सेन्स को समझने की। ताकि कम समय में हम अपने कंटेट पर अच्छा ट्रैफिक ला पाएं।

दुनिया से हटकर

हम जबतक ये सोंचेंगे कि दुनिया क्या सोचेगी? तबतक हम कुछ नहीं कर पाएंगे, लेकिन जिस समय हमने सोच लिया कि हमें यही करना है। तो फिर कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स आज असीमित मंच प्रदान कर रहा है। इसके गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए आप जो कुछ कर पाएंगे, उसे करना चाहिए। चाहे वो किसी भी विधा में क्यों न हो। आपका कंटेट रन करेगा और आपकी झोली भरेगी।

प्रयोग में बरतनी चाहिए सावधानी

सोशल मीडिया ने आम लोगों के जीवन को आराम जरूर दिया है, लेकिन इस्तेमाल में सावधानियां भी जरूरी हैं। क्योंकि ये आपके निजी जीवन, गोपीनियता और आर्थिक गतिविधियों की जानकारी भी रखता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया हमारे जीवन में सकारात्मक भूमिका अदा करता है, लेकिन समृद्धि से पहले हमें सतर्क रहना होगा और संयमित होकर इस प्लेटफॉर्म पर काम करना होगा। ताकि बिना जोखिम के फायदे हों, नहीं तो कई बार केवल एक क्लिक से लोगों को भारी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

हम पूरा फर्ज निभाएंगे

जब भी मौका मिलेगा,
जान हम लुटाएंगे।
तेरी रक्षा के लिए,
बलिदान हम हो जाएंगे।।

चाहे कट जाए सिर मेरा,
पर सिर नहीं झुकाएंगे।
चाहे जाएंगे जहाँ कहीं,
गुनगान तुम्हारा गाएंगे।।

तेरे चरणों में भारत माँ,
हम अपना शीश झुकाएंगे।
नीले नभ के नीचे माँ,
तिरंगा हम लहराएंगे।।

अपने देश की माटी का,
तिलक हम लगाएंगे।
दुश्मनों को धूल चटाने की,
सौगंध हम खाएंगे।।

तुम्हारी सेवा में भारत माँ,
बढ़–चढ़कर आगे आएंगे।
तुम्हारी संतान होने का,
हम पूरा फर्ज निभाएंगे।।

विन्दु प्रिया, शिक्षिका
(निर्मला बालिका उच्च विद्यालय, महेशमुंडा, गिरिडीह)

झारखण्ड कर 'करम परब'

गोटे झारखंड आदिबासी ससकिरती से सजल गजल हे। जहांक लोगेक नसे –नस परकिरती ढुकल आर मडियाइल हे।जइसने श्करम परब श्परकिरती से जुड़ल हे वइसने हामिन के पुरवज सभेन एकरा सेंवउरन करे खातिर परकिरती से जुड़ल फर पतय से जोइर के बंचाय राखल हतश ।करम परब ष सोझे सोझ परकिरती परब लागे जेकर में बहिन सोब भाय के निक सुख सवांग बनल रहे,भाय –बहिन के रछा जीवन भइर करइत रहे, से लेल बड़ी रीझ रंग से करहत। झारखंड में करम परब जइसन महातम देखल जाहे वइसन आर कहुं नाय देखेले मिलेहे अइसें तो कुड़मी किसान घारे इ जुकती पसरल आहे –ष्बारह मासे तेरह परबष हिंया रहेवाला सोब अनठेकान परब मनावहत मकिन अनठेकानो में दु चाइर गो परब हियांक हिरदय में जमइड़ के बइठल हे, जकर नाम गिनावल जाय पारे –सरहुल ,बांदना (सोहराई), बंउड़ी बिसु (चड़क परब),करम परब, मनसा,(बारी परब) ,जइसन परब अछल गदल नाइच के मनावे वाला परब लागे।

जुगाइत जुगाइत ले इसब हिंया बोहल आय रहल हे।करम परब पुजेक (सेंउरन)करेक नेगे नेग गीत गावेक रिवाज चलल आइल हे।नेग नियम में कहुं कहुं तनी मनी फरक पवाहे , मकिन सोब दने पुजेक विधि एके नियर भेंटाहे।

पहिल नेग

जाउवा परचावेक नेग –पहिले श्करम परब श आवे से एकाद महिना आगुवे ले सोब करमइति आखड़ायं जमा होयके झुमइर खेले हेला।मेंतुक आइझ काइल के छउवा सोब नोव,सात,पाच दिनेक जाउवा उठायके श्करम परब श्मेंटाय दहत।करम पुजइति सब में दु गो खांधा हेवे हे।जे करमइति गुला ष्डलइतिष रहहत उसब जाउवा उठावेक दिन से परनी पाट (निषेध पालन) दियेक सुरू कइर देहत।मास,मछरी,जलल,पोड़ल,ठिठरल,गरमल,पकावल,बासी,तातल,गुर चीनी,जइसन चीज बसुत नाय खाहत।महिनवारी हेवल करमइति के करम परब नाय करे बनेहे।जोदि इसब ओखिन नाय मानहत तो ओखिन के जाउवा बेंड़ाय जाहे।आखरा के चटिया बेंड़ाइल जाउवा देइख बेंते बेंत ठेठावे लागहइन ।आंधरा जाउवा खातिर इसब नियम लागु नेखे।

जाउवा उठावेक नेग – भादोक रोपा जइसने सिराय लागेहे सोब बहिन के नइहर आवेक आस बइढ़ जाहे।सोब भाई, बहिन के लाने ले बांसेक टोकी में अइरसा आर धुसका, खाला रोटी लयके बहिन के लाने ले जाहत।जोदि कोइ सवासिन नाय पहुंचे पारही तो ससुर से बिनती करही कि चला लेइग राखा करम परब करब जेकरा इगीते बुझल जाय पारेहे –

करही कि चला लेइग राखा करम परब करब जेकरा इगीते बुझल जाय पारेहे –

बितलय सावना आइल भादोक दिनवा,
चाला ससुर ,हांमें जइबइ नइहर गो...२
भोरलय गाढ़ा नाला,भोरलय जमुना गो,
बोहाय जाबे,बहु भोरल जमुनाय गो ...३
काटबय कांसी कुसी बनाइबइ नाव गो,
नावे चढ़ी,ससुर जइबइ नइहर गो...३

भादोक इंजोरिया एकादसिक राइते श्करम परब श मनावल जाहे। सवासिन,डंगुआ करमइति जावा उठावेक दिन बिहाने नदी जाहत। कहुं कहुं बांध पोखइरो में नेग गुचावल जाहे।जाउवा उठावेक (परचावेक) खातिर कांचा बांस कर डाली सुध मानल गेल हे। जावा उठावे जायक पहर जे संगी पेछुवाय जाहत ओखिन के अगुवाइल संगी सब नाम पकइर लुलुवाय लुलुवाय के खुभे गरिवाहत ताकि जलदी अंटियावे आर सोब रीझे रंगे संगे लुंगे जाउवा उठावेक नेग उसरे।जकर गीत हे –

ष्सभे करमइतियन हो,संगे चली आइला ,
बलिओ रे....
फलना रे,फलना छोंड़ी कहां पेछुवाइल।
फलना कर मरदा हो,बड़ा नटनागर,
बलिओ रे...
झोंटी रे, झोंटी धरी राखलय घुराय।

जब नदी पहुंइच जाहत तो सोब नहाय धोय के डाली भोरे लागहत।डलइतिन फरके जाउवा भोरहत जकर में धान,बुट,कुरथी,जोव,जोंडरा,घंघरी बालु जोरे मेसाय के जाउवा बनावल जाहे।जाउवा घार लानल बादे रोज साइंझ के जगावे हेवे हे।जाउवा जगावेक पहिले आखरा इ गीते बांधल जाहे –

अखरा वंदना करू सरसति माइ गो,
तबे रे वंदना ब्रजो नारी

मधु में झुमइर लागल भारी...२
केहु जे गावे,केहु बजावे गो,
कोना सखिन देलय ललकारी
मधु में झुमइर लागल भारी..२
रामा जे गावे,लछुमन बजावे गो
सिता सखिन देलय ललकारी
मधु में झुमइर लागल भारी...२

आखरा बांधल बाद जाउवा जगावहत जकर गीत हे –जखन भया आवय उपराक खोरिये गो, ओ....रे.....
तखन सासु लोटवा लुकावय गो ,
ओ...रे....२
लुकाहु गो सासु अपने जे परियें गो,
ओ...रे...
मर भया रुखे गोड़े जयतय गो,
ओ...रे...२

आखरा बांधल बाद,आखरा मेरियावहत जकर गीत हे –––
बांका रे बांका कुरथी
भुंजे बैठइल छोटकी ननद
भुंजइते भुंजइते ननद पोइड़ गेल
लाजोहुन गेइल ससुराइर।
ओहे समय ऐहो गीत गावल जाहे
जोतल खेता मेरियाय देल,
उठी गेलय गहुंमन सांप,
करम डाइर लानेक नेग

संजोत के साइंझ पहर नइआ/पाहन/माहतओ आर टोला टाटीक बोड़ बुजुरग सोब कोइ करम गाछ के लोटा पानी दिये जाहत।गुंड़ि सिनदुर धुप आरवा चाउर दइके श्जगायश राखहत। कहूं कहुं इ नेग उपास के दिनहु करल जाहे।उपास के दिन फइन साइंझ पहर गांवेक पाहन (नइआ)नी तो माहतो नेग धरम गुंड़ि सिनदुर धुप दइके सेंउरन कइर आदर से ओकर दुइचेंगा डालि काटहत।करम डालि काटेक समय,लानेक समय करमइति सब नाय देखहत।सबले पहिले करम डाइर गांवेक मंड़येक आखरा में गाड़ा हे।हुंआ पुजा भेल बाद गांवेक आखरांय,आंगनाय गाड़ेक नेग जुगाइत जुगाइत ले चलल आय रहल हे।मंड़य गाड़ाइल डाइर के पाहन पुजे हे।पुजल बाद ओकरा राइते बोहाय (भंसाय)देहत,तकर बाद आखड़ांय करम डाइर गाड़ा हे।तुरते उखाइर के भंसावेक पेछु इ मानयता हे कि –एक बइर पाहन करम डाइर के मोड़येक आखरांय राइत भइर सुना छोइड़ देल,आर बिहाने उखारे गेल तो नाय कबारे पारल।सय ले आखरा में गाड़ल करम गोसांइ के राइत भइर सुना नाय छोड़ल जाहे।इ एकदम सच बात लागे जकर परमान हाम आपन गांवे में देखल ही।

३.करम डाइर गाड़ेक नेग आर चीज बसुत –– करम डाइर गाड़े में जे जे बसुत लागे हे ओकर नाम हे –––

१.करम डाइर दुइगो चेंगा वाला २.कांसाक लोटांय एक लोटा पानी
३.आरवा धान एक मुठा
४.आरवा चाउर ५.रहइन माटी
६.तांबा पइसा(आइझ काइल गिलट भी चलेहे) ७. कसइलि (सुपाड़ी)८.कांटी ६.दुब घास
१०.चिरचिटि, धान गाछी
११.बेलपतय आरो आरो लागे पारे...।इसोब चीज बसुत के संग पाहन नहाय धोय के आखड़ा के परनाम कइर करम गाड़े खातिर आखड़ांक माझेमाझ गाढ़ा कोड़े हे। गाढ़ा में धान,रहइन मांटी,चिरचिटी,कांटी,काचा,सुपाड़ी सोब डालल बाद करम गोंसाइ के डंड़ावे (खड़ा)हे।

करम डाइर पुजेक नेग

उदिन सब सवासिन साइंझ पहर फुल लोरहे जाहत, जायेक बेरा जे गीत गावहत ओकर बोल हे––

अलना डलना के डाला बुनावल सिरी राम
पारबती फुला लोरहे गेल सिरी राम..२
एक फुला लोरहल दुयो फुला लोरहल सिरी राम
तीने फुलांय ससुर लेनिहार
सिरी राम..२
ससुरा हो संगे हामे नाही जाइब सिरी राम
घुघुवा टानाइते दिना जाइत सिरी राम २
अलना डलना के डालावा बुनाइल
सिरी राम

डाला लये फुला लोरहे गेल सिरी राम..२
एक फुला लोरहली दुयो फुला लोरहल सिरी राम
तीने फुलांय भेंसुर लेनहिहार सिरी राम..२
भेंसुरा हो संगे हामे नाही जाइब सिरी राम
फखुरा ढांपाइते दिना जाइत सिरी राम..२
अलना डलना के डालावा बुनाइल सिरी राम
डाला लये फुला लोरहे गेल सिरी राम
एक फुला लोरहल दुयो फुला लोरहल सिरी राम
तीने फुलांय संया लेनीहार सिरी राम..२
संयवा हो संगे हामे चली जाइब सिरी राम
हंसते खेलते दिना जाइत सिरी राम..२

सोब ले पहिले कादो फुल बेलोंजी फुल लोरहत तकर बाद धान फुल लोरहत।फुल लोरहल बाद जलोसियार के दतुन पतय दय,नाहाय धोय के घार आवहत।

घार आइल बाद फुलेक टोकी छाइन में राखहत।नावा नावां कपड़ा पिंइध के कांसाक थारी में पुजेक सामान लय आखरा जाहत।थारा में गुंड़ि आरवा चाउर,दुब घास,घियेक दिया,घोड़ा में खीरा बेटा आर अंटरी बंटरी रहेहे।थारा के पेकची पतय में डाबल सुध मानल गेल हे।सब करमइति आखरा में करम डाइर के चाइरो दने बैठहत।पुजा शुरू करे से पहले चटिया आवहइन जावा देखे ले। ओकरा देखिके सोब इ गीत गावहत

'कोना खोरी आवय भगता ओ मान सिरी राम
कोना खोरी आवय हनुमान सिरी राम..२
सोने खोरी आवय भगता ओ मान सिरी राम
रुपे खोरी आवय हनुमान सिरी राम..२
किया फला खइतय भगता ओ मान सिरी राम
किया फला खइतय हनुमान सिरी राम..२
दुधा लावा खइतय भगता ओ मान सिरी राम
संकर लडु खइतय हनुमान सिरी राम..२"

तकर बाद पुजा शुरू हेवेहे,पुजा में करमा धरमा कर कहनी कहल जाहे।जकर अइसन मानता हे कि करमा धरमा नामेक दुगो भाइ रहत।करमा काम करे में बिसवास करे हेल आर राइत दिन आपन खेंते खटे हेल।सय ले ओकर घार धन धान भोरल रहे हेलइ। कोन्हों चीजेक दुख तकलीफ नाय रहे हेलय।दोसर भाइ धरम पर बिसवास करे हेल।काम करइते मोरगरइन दिये हेलय।फुटानी पाद इत दिन काटे हेल।सय ले , ओकर खाइक पींधेक में तकलीफ रहे हेलय।मकिन जहिया ले करम करे लागल निक सुख रहे लागल।

कहनि कहल बादे सोब बहिन करम डाइर पकइर के एगो गीत गावहत देखा–

कना रोया पुजे दुधा केरी गछा
कि कोना रोया,ये बजावहय बनसुली कि कोना रोया.
नुनी रोया पुजे दुधा केरी गछा
कि बाबु रोया,रे बजावहय बनसुली..२

तकर बाद आसिस मांगहत –––
दीहा दीहा करम गोसांइ,दीहा असिस गो,
मोर भया जियतय लाख बरिस ।

पुजल बाद करम बेरावहत,तखन एकरा गावहत देखा ––
कवना कर दियरा,कवना कर बाती
जरू रे दियरा,आझु कर राती..२
सोने लागला दियरा,रूपे कर बाती
जरु रे दियरा, आझु कर राती..२
जरे लागल दियरा,चमके लागल बाती
जरू रे,दियरा आझु कर राती..२

ओकर बाद ––
अन दिना गोवरी,रहले कुंवार
आझु गोवरी हेवलन बियाह
अना दिना बेटा लरवांय न फरवंय
आझु बेटा सोनवा कर थारवांय
आझु बेटा नाना नानीक पेटवांय

भंसावन ––
भंसावेक दिन करमइति सब खुब नाचहत आर साइंझ पहर करम गोसांइ के तालाब नी तो नदी में भंसाय देहत।करम डाइर भंसावे लेगेक समयेक गीत––
कोना मोरा लेगतय,
झांझी मंदरिया हो –२
कोना मोरा लेगतय
करमा गोसांइ..२
भया मोरा लेगतय झांझी मंदरिया हो...२
हामे संगी लेगबय
करमा गोसांइ...२

भंसावेक बेरा –
जा हो,जा हो,
करमा गोसांइ हो..२
आवतय भादर मास
लानबोन घुराय..२

भंसाय के घुरेक बेरा ––
ष्करमा खेललें मयां जितिया गे
जितिया खेलबें ससुराइर
ससुराइर जाबे मंइयां
लेसन पोतन करबें गे
दया..
दुबे चाउवरें गइया तो चुमाइबें..।

एकरो गावल जाहे––
कोना फुला फुलय रे दया
आगा धाजा डरियांय हो
दया कोना फुला फुलय
बीचे डाइर.....।

इ लखे करम परब कर इतिहास दने नजइर देले फरनाय जाहे कि करम परब में कोन्हो बांभन नउवा के ठांव नेखे।करम परब मुल रूपे परकिरती परब लागे। एकरा बांढ़ावे,बांचावे खातिर हामिन जागे हेत तबे आपन संसकिरती बोहत आर बंचल रहत।

गुलांचो कुमारी, शिक्षिका
उत्क्रमित उच्च विद्यालय भुरकुंडा

खोरठा शब्दावली

१.यहाँ–वहाँ–––हिंआँ–हुवाँ
२.इधर–उधर -- हिन्दे–हुन्दे/हिने–हुने, ई धाईर – उ धाईर
३.जब–तब––– जखन–तखन
४.अभी–अभी––––––एखने–एखने
५.जब तक/तब तक––– जखन ले/तखन ले
६.जहाँ/तहाँ/कहाँ ––––– जन्दे, तंदे/कंदे
७.लेकिन/किन्तु/परंतु - मेंतुक/मेनेक/मकिन
८.अगर–मगर––– अगुर–मगुर

नातेदारी सबद

१.दादा जी ––– आइयो/ आजा /बूबा
२.दादी जी––– आइयो/आजी ममा
३.चाचा––––– काका
४.चाचा ससुर–– काका ससुर/ पितिया ससुर
५.चाची सास– काकी साइस/पितियाइन साइस
६ चाची ––––– काकी
७. माँ ––– माँय
८.बेटा–– बेटा/पुता
९.बेटी ––– बेटी
१०. बहन ––– बहिन
११.भाई ––– भाय
१२.दीदी––– दिदी
१३.ताउजी। ––– जेठा/ बोड़ बाप/ गुंगुबाप
१४.ताई ––– जेठी/बोडमांय/गुंगु मांय
१५. भाभी ––– भउजी
१६. देवरानी/जेठानी ––– गोतनी
१७.ननद का पति ––– नंदसु
१८.जीजाजी ––– भाटु
१९.साला ––– सारा /जेठ सारा
२०.साली ––– सारी
२१.साला की पत्नी ––– सरोजिन
२२.छोटी बहन का पति –– बहिन जवांइ
२३.भतीजा––– भइतजा
२४.भतीजी––– भइतज
२५.भांजी ––– भइगनी
२६.मामाजी ––– मामा/मामू
२७.बुआ/फुआ ––– फुफू
२८.मौसा ––– मोसा
२९.मौसी ––– मोसी
३०.पति ––– सयां/ मरद/ बेगइट
३१.पत्नी––– जनी/बहु/
३२.पर दादा ––– आजा बुढा/ दादा बुढा
३३.पर दादी––– आजी बुढ़ी/ दिदी बुढ़ी
३४. नाती/पोता ––– नाती
३५.पोती/नतीनी ––– नातिन
३६.सास ––– साइस
३७.सौतेला पिता––– कठबाप

पेसा या अवसरगत नाम

१.घरेलू नौकर ––––– धांगर
२.नौकरानी –– कामिन
३. हल चलाने वाला–––हरवाहा
४. धान रोपने वाली ––– रोपनी
५.बैलगाड़ी चलानेवाला ––– गाड़ीवान
६.चरवाहा...गोरखिया
७.बराती ––– बरिआती
८.ढोल बजाने वाला––– बजनिया
९.मेहमान ––– पोहना/मइहमान
१०.रखैल ––– रखनी

रंग बतवे वाला सबद

१.काला ––– करिआ
२.लाल –– लाल
३.पिला––– पिअर/ हरदिर
४. हरा ––– हरिअर
५.नीला ––– लील
६.जामुनी ––– जमनिआ
७.बैंगनी ––– बइंगनिआ
८.केसरिया ––– गोला
९.नारंगी ––– कमला
१०. सफेद ––– सादा
११.आसमानी ––– आकासी
१२.रंगीन ––– रंगुवा
१३.सिंदूरी ––– सिंदरिया
१४.चटक लाल ––– आरता
१५.सांवला ––– तेलसावँर

सवाद बताने वाला सबद

१.मीठा–– गुरवा
२.नमकीन ––– नुनिआ/ निमछाइंद
३.कडुवा––– तिता
४.तीखा ––– मिरचा
५. बिगड़ा स्वाद–––आलाइंद
६.कसैला––– कांसा
७.बेस्वाद ––– आलना
८.मछली का स्वाद––– बिसर
९.हल्का कड़वा ––– टितकुठ
१०.खट्टा––– आमत

अनाम अजनबी
सहायक प्राध्यापक
राधा गोबिन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़

खोरठा लघुकथा : इंसानियत

आइज सुरेश बाबूक मन मलिन हइनद्य जीबनेक गाडी बड़ी निरस आर बेथाञ् चइल रहल हइन मकिन दुखेक बेथा केकरो से कहलो नाय जाय पारे। मनेक बेथा मने रइह गेल। बेचारा इ गादराइल जवानियों में हाँसी – खुसी से आपन दिन नाय काटे पारे। कि करत किस्मतेक मारल रहतल तो ओकरा आपन करम से बदले पारतल मकिन इ ओकरो से बोड सामाजेक मारल मानुस हे। मने एकेगो भाभना बा फिकीर हे कि जवान बहिनेक बिहा केइसे करत??? पाँच बछर से बर–कुटूम देखे लागल हे मकिन कनहियों से कोय कुटूम नाय लाइग रहल हे ऐहे चिन्ताय दिनों भइर भाभनाय डुइब रहे हे आर गालहाथा दय मनमारु भय निझुम बइसल रहे हे। बहिन बिजली रूपे–गुने, बल–बुधिय चनफन ही आर टहटह,गादराय देखा ही मेन्तुक चिन्ताक लेल लटल आर सूखाइल जाय रहले ही, कि करती गरु–लेरु, घारकारना सब ऐकरे जिमे हइ। वइसे घार–दुआइर, पइसा–कौडी, खेती–बारी बा आर कोन्हों चिजेक घटी नखइद्य मकिन एहो चिन्ता–फिकिर से बाहराय नाय पारही आर ऐसे भाभनाय दुयो भाय–बहिन हेठमुढ आपन–आपन दुनियाये डूबल हथ।

अचके हेफरा–हेफरी बा बेचौन गनेस, सुरेस बाबूक घार ढूकल आर ढूकइत– ढूकइत सुरेस बाबूक गोडे गिरी देल आर कहे लागल– सुरेस बाबू हाम चाइरों बाटे ले परेसान,हातास आर निरास भय बड़ी आसा आर उम्मीद से तोहर पास आइल हियोन। हामर जान बकसी दाय सुरेस बाबू तोहर बिनू हामर घार आँधार भय जितय, हामर जिनगीक दीया बुताय जितय द्य हामर बेटा हास्पिटले जीवन आर मिरतुक मइधे लड़े लागल हे ओकर जान तोहर हाथे होन। गाडिक एक्सिडेंट में ओकर मुड़ी (माथा) फाइट गेल हइ। ताहाँ–ताहीं ओकरा 1 युनिट खुइन चाही। मकिन पुरा बलड बैंक में के एक टिपका खुइन नखइ आर गोटे गाँवेक माँझे खाली तोर खुइनेक ग्रुप हो बाकि केकरो खुइनेक ग्रुप नखइ। हाथ जोड़ो हियो,गोड़ परोहियो, जते धन–सम्पत,टाका–पइसा (काचा–कौड़ी), घार–दुआइर चाही हाम देबउद्य ताव हामर घारेक आलो निझाय नाय दे। कहइत – कहइत चितपतांग गोड़े गिरी जाहेद्य फफइक–फफइक कांदे लागलद्य

मकिन सुरेस ओकर एक बात नाय सुनलद्य उलटा बमकी बा खखूवाय उठल – हाम कि ले खुइन देबो...आँय.. तोर कारजा खाइल हियों की ? तोर बेटा बोरोउ बा बाँचउ, हामर बापेक की ? बड़का धन–सम्पत आर टाक–पैसा वाला भेल हेद्य हाम लाँगटा ही त कि भेलइ,तोरा माँगे गेल हियों की?? आँय.. जो आपन गोतिया–भयाद आपन जाति–बिरादरी के माँगभी। आर एगो बात सुन – जाव जीनगी हाम बाँचल ही ताव ले खुइनेक एक बूँद, तोर बेटाक नाय देबो। इँह! हामर खुइन टाके गाजारा आर मुराय बुझे पावल हे। बेचारा गनेस जे गोड़े आइल हल, सेहे गोड़े धुइर गेलद्य

तनी सुन घारे संनाटा भेलद्य दुयो भाय–बहिन चिन्ताय डुबी गेलाद्य पिछु बछर माघ महिनाक दिने चाइरो बाटे टहटह बिजली बातिक इंजोरे घारेक आँगना जगमग हेद्य चहल–पहल आर गहमागहमी भीड़ हेद्य चाइरो बाटे लोक केउ कामे, केउ नाचे–गावे त केउ मोदे माताइल हथद्य सहनाई,ढोल आर ढाकेक बाजनाय बिहाक सब नेग–जोग हवे लागल हेद्य बारात दुवाइर लागल, बेचारा सुरेस एकले बारातीक – सारातिक सेवा करइत – करइत थकी गेल हे। तावो हुबे मन मताय गेल हइ, खुसिक ठेकान नखइ। काहे कि ओकर दुलारी बहिन बिजलीक बिहा हवे लागल हइ, ई दुनियाये बहिन बिजलिक छाडा आर कोय ओकर आपन नखइ। मकिन एतने में बोरेक बाप गनेस एके गोड़े नाचे लागलद्य सुभ कामे गाहना लागी गेल। बाराती – साराती सब हाय–काठ भइ गेला कि आखिर की हेलय?? की ले सिन्दरा दान रुइक गेल?? गनेस कहे लागल– नाय.. नाय..इ बिहा टा नाय हतोद्य बाप रे,बाप! आज त हामर धरम भ्रष्ट भे जितलयद्य पांड़े–बाभनेक सब मान–सम्मान टा फुराय जितलयद्य अरे! बेटाद्य चाल–चालद्य इ पांडे–बाभन नाय हको। इ त ओहे रघुवा पंडित के बेटी लागो जे झुमरी चमारिन के गोड चटल हलइ आर 15 दिन ओकरा आपन घारे राइख के आपन गातेक पियास निझवो हलय आर पुरा चुइस के आँठी के फेंइक देल हलइ। एइसन भ्रष्ट आर नीच घारे हाम आपन बेटाक बिहा नाय करब।

सुरेस बेचारा गोड़–मुड़ परल, गिडगिडाइत रहलद्य कहे लागल– माय–बाप, काका–काकी, आजा–आजी,गोतिया–भयाद सब छोड़ी चली गेलाद्य हाम अनाथ के आपन कइर ला गनेस बाबूद्य हामर बाप–मायेक सज़ा हामनिक की ले दाहाद्य हामनिक की दोष ही मेन्तुक गनेस ओकर एक बात नाय सुनलद्य गाँवेक पंचइतियों में पंचायत सुरेस के हुका–पानी बंद कइर देलइद्य सुरेस मने–मने भाभे लागल – ओह! रे, मानुसेक ढढनच .... ओह! थे, नीच मानुस.... ।

जदि झुमरी काकी नाय रहतली तो कोन्हों पंडिताइन बा पंचाइतेक जनी छउवा जनमावे नाय पारतला। काहें की ओहे एगो दायी हली जे सभे जनीक सेवा करो हली। हामर माँय तीन बछरेक उमरे हामरा छोइड के भगवान ठीन चइल गेल हली। एक बेर बिजली डायरिया बीमारी से हागइत–हागइत सुखाय गेली हइ तखन ऐहे झुमरी काकी 15 दिन घारे रइह के बिजलीक नावा जनम देल हली मकिन पानी आनइत बेचारी झुमरी काकीक गोडे काँटा भोंसाय गेलइ आर काँटा टानले नाय टानाय तखन हामर बाप आपन मुँहे काँटा धइर टाइन बाहराल हलइ। तखनी से बाभन सब राजनीति कइर हामनिक हुका–पानी बंद कइर देला।

एतने में बिजली सुरेस के चेठा जागावली आर पानी आने गाँवेक कुआँ गेली। जइसे–जइसे पानी आनइत तनी बिजलीक देर भेवे लागलइ। हिने सुरेस बाबूक इंसानियत बा मानवता जाइग उठलद्य बेचारा धान–फानाइल उठल आर हास्पिटल जाय डॉक्टर से भेटाल मकिन डॉक्टर कहल – "आपने बहुत देर कर दी सुरेश बाबू....अब खून की कोई आवश्यकता नहीं है।" बेचारा डोमना मलिन भेइ गेल आर आँइख डाबडाबाय गेलइद्य आपने आप से कहे लागल – अरे! पापी। नीच! अधर्मी! तोर उपर कीड़ा लागत उ.. तोरा पोका–पीलू खाइबथुन ... .तोर मोरल पर चील–कौवा खाबथुन ! आँक .. थूँ...! तोय आपन मानवता आर इंसानियतों भुइल गेल हे। तोर एइसन अपस्वार्थी आदमी.. छी....!

एतने में डॉक्टर कहल– "सुरेश चिंता की कोई बात नहीं है। गाँव की एक सहृदयी लड़की ने अपना खून दे दिया है और मरीज़ अभी स्वस्थ हैं।"। सुरेस आपन के कोसे लागल। मेन्तुक मने एगो संका भेलइद्य हामर छाड़ा गाँवे ө+ ग्रुपेक खुइन केकर हवे पारेद्य डॉक्टर इसारा कइर कहल– "खून देने वाली लड़की बहुत ही कमजोर थी। मेरे लाख मना करने के बावजूद भी उसने अपना खून दिया। परन्तु अभी वह बाहर के बेड में बेहौश पडी हुई है।" सुरेस जइसे आपन बहिन के बेहोस पड़ल देखल ओकर आँइख डबडबय गेल,बोली बाझे लागल, फफइक–फफइक कांदे लागल..... बहिन बिजली आइज तोय मानुस जाइतेक लाज राइख देलेद्य हाम सब के एगो सिख देले,आदमिक जाइत–पाइत, भाय–गोतिया से बोड़ केउ रिस्ता–नाता है त उ हे.. इंसानियत आर मानवता के नाता।

लेखक
रमेश कुमार महतो

खोरठा गीत

करमा परब 'चला बहिन मिली–जुली'

चला बहिन मिली–जुली,
मिली–जुली आनब डाला।
नदी–जोरियें जाय कें,
डाला में राखब बाला (2)

घंघरी–बरइ–उरीद से,
पारबय हमनी जावा।
जावा पारी के बहिन,
सातो दिन गीत गावा (2)

बिहाने दुपहरिया सभे,
जावा के जगावा।
जावा के जगावे में,
सांझी–राती गीत गावा (2)

एकादशी परबा सभीन,
नाइच–गाइ के मनावा।
मिली–जुली कइर के उपास,
करमा के गीत सुनावा (2)

करमा के डाइर गाडा,
बेलंदरी फूल चढ़ावा।
आपन करम कइर के,
भइया के धरम करावा (2)

पइत बछर अइहा करम देवा,
दिहा आसीस गो,
भइया हामर जीयतय
लाख बरिस गो (2)

✍ पुनीत साव

खोरठा कहनी : भरम

संदीप कुमार महतो

एगो बाभनेक आर एगो चासाक गिदर दूइयो मिइल के फुल पतवला। तखन ले दुइयो गिदर एके संगे रहे लागला आर खेला–कुदा करे लागला। एक दिन चासा गिदरेक गाते एगो माकड़ा चढ़ल। सइ तखन ओकरा भइ – भइ नियर बुझाइ लागल। सेटाक खातिर उ बाभन गिदर के पुछल – ऐ फुल देखाक न हामर गात टाञ की चढ़ल हे। तखन बाभन गिदर कहल–ऐ फुल तोहीन कर गाते त माकड़ा चढ़ल होन आर जदि गाते माकड़ा चापे हे त दोस लागे पारे , त तोहीन एगो काम करा हामर बापे पोथी– पांजी देखे जान्हे हे , तनी देखाइ लेल टा बेस रहइतलो। काहे की ईटा एक दिनेक बात नाञ लागे कधियो कुछो हवे पारे तखन कि करबाइ ? सइ सुइन के चासाक गिदर आपन बाप ठीन गेल आर कहे हे दृऐ बाप हामर गाते एगो माकड़ा चढ़ल रहे त तोञ तनी फुल बाप के पोथी – पांजी टाञ देखाव तल्ही की पाछे कोन्हो दोस हइ न की! तखन चासा करत की ? चासाक एगो बेटा रहइ , सइ खातिर ओकर गाते डर चाइप गेल आर फुलेक ठांव चइल गेल । पहुंच के फुल के सुनावला कि फुल हामर गिदर टाक गाते जे एगो माकड़ा चापल रहे त तनी देखाक न पांजी–पोथी टाञ पाछे कोन्हो दोस गुन्हा पावे हे न की ? फुल सुइन के किसान के कहऽहथ दृ बाप रे .....बाप रे माकड़ा गाते चढल रहे ,एकर में त ढ़ेइर बोड दोस लागे हे । किसान सुइन के ओकर गात कांपे लागल आर भाभना करे लागे हे ! आबरी किना करब आर कीना नाही रे बाप। बाभन कहे दृदेखा फुल कोन्हो काम समये करले दोस नाञ लागे हे । किसान कहे हे – आबरी किना करब आर कोन काम टा करले दोस टा काटातइ सेटा कहा , काहे कि तोहीन त जानभे करहिया की हामर त एके गो बेटा हे । तखन बाभन कहे हे – तबे सुना फुल कि करे हेतोन से सबले पहील एगो सोनाक माकड़ा बनाइ के दान करे हेतोन , आरो – आरो ढेइर नेंग जोग करे पड़तइ, पहीले ईटा के जोगाड़ करा । किसान घर आइल आर बेटा के बचवेक खातीर सोनाक माकड़ा बनवेक जोगाड़ करे लागल । ओकर बेटाञ कहे हे – बाप हामर कोन्हो नाइ हेवत तोरा डेरायेक नेखो । चासा! छउवाक बात नाइ माने हे आर बाभन कर कहल अनुसार उ सोनाक माकड़ा बनवेक उता–सुता करे लागे हे । कुछेक दिन बादे चासा एगो सोनाक माकड़ा बनाइ के बाभन के डाकल त बाभने पुजाक जेतना जर–जंतर बा पुजाक समान एगो पुरजा में लिइख दे हे । तखन किसान सभे समान के लइ आने हे। ताकर बादे बाभने पुजा पासा कइरखुन गाते माकड़ा चापल दोस के गुचाइ देला ।

किसानेक छउवा भाभना करे लागे हे की ई दोस टा आबगा चासा घरे पावा हे ना बाभनो घरे पावा हे । तखन चासाक बेटा एक दिन करल उपाइ , एगो माकडा धइरके आने हे आर बाभनेक गिदर संगे खेले लागे हे । फांका पायके चासाक बेटाञ बाभनेक बेटवाक गाते माकड़ा चढाइ देल आर कहे लागल की आइज तोरो गाते माकड़ा चढ़ल होन । बाभनेक गिदर सुइन के तुरते आपन बापेक ठांवे गेल आर सुनावे हे कि बाप आइज हामरो गाते माकड़ा चापल रहे । तखन बाभने कही उठेहे दृधुर बेटा माकड़ा गाते चढ़ले कोन्हो नाञ हवे हे , माकड़ा चापले आरो बेस हवेहे नावा–नावा लुगा–फाटा लियाइतो । ईटा त मानुसेक भरम लागे ।

करम झुमइर गीत

01

केथिक डरे गे हांथिन बोन समइलें?
केथिक डरें गे हांथिन कादँाइ लेटइलें?
माछिक डरें गे हांथिन बोन समइलें।
लुतिक डरें गे हांथिन कादँाइ लेटइलें।
के तोरा गे हांथिन घास काटतउ?
के तोरा गए हांथिन पइन भरतउ?
राम–लखन गे हांथिन घास काठतउ।
सीता सांवइर गे हांथिन पइन भरतउ

02

राम चललइ बोनबासे करम दसे
राम चललइ बोनबासे
आगू–आगू रामचंदर, पाछे भइया लछुमन
मांझे चललइ सीता करम दसे
राम चललइ सीता धनी करम दसे
राम चललइ बोनबासे
घुरू भइया रामचंदर घुरू भइया लछुमन
सीता के राखा घुराइ करम दसे
राम चलल बोनबासे
नांहि हामें घुर–बह नांहि हामें किसवई धइर हइ।

हमरा लिखल बोनबासे करम दसे
राम चलल बोनबासे
हजु बोना चली जइहा, बीजु बोना चली जइहा
तुलसी के बोनवा मति जइहा हो लछुमण
तुलसी के बोन मति जइहा
तुलसी के बोने हइ मालिनी बेटिया
हाइरे हाइ।
जोग दइए राखतो लोभाई हो लछुमन
तुलसी के बोन मत जइहा
राम चललइ बोनबासे करम दसे।

03

बान सिंग, बान सिंग अइसन जबान सिरिराम
मस–मस कर–हइ बांइह सिरिराम
किआ लेले आवे, अइसन जवान सिरिराम
किआ लेले आवे बीर हलुमान सिरिराम
करम लेले आवे अइसन जवान सिरिराम
इंद लेले आवे हलुमान सिरिराम
कहाँ जे जाउता करम गोसांई सिरिराम
कहाँ जे जउता ईंद सिरिराम
अखरा हीं जउता करम गोसांई सिरिराम
खेतवें जउता ईंद सिरिराम।

खोरठा कविता : ओह दामुदर !

✍ **दिनेश कुमार दिनमणि**

ओह दामुदर !
कहां हेराइ गेलउ तोर
ऊ हुलसल–हांसल मोहड़ा
कहां गेलउ तोर
छउआ लेखें
किलकाइर मारइत
निरइठ निरमल धार?
जइसन गायेक थन से
बहराइल परपन उदार !
ऊ सभ्यता–संस्किरतिक
ताजिबकारी तालेबरिक
गउरब–गान!

हाम सुनल हों
तोर उछलइत–उमकइत धारें
गुंजरइत मांदइरेक धातिंग–तांग
बांसुरिक मधु माखल तान !
हामर कानेक ठोनगीं
चुवइते रहल हे रस
सोहराय आर
भदरियाक गूंज केर।

हाम तोर में बोहइत
करम–जावाक
पवितर पियर पोहा के
गोइंज आपन कान उपर
हवइत रहल हों नेहाल
हर साल ।

बुद्ध केर
सत्य–अहिंसाक
मानुसाली हांक
तोर करघाइं
आवल हे गुंजल

जेकर खंघटल
साबुज–परमान
तोर कोखें
एखनो हे संचल !

हमरां मालूम हे
जन हितेक हाबा–हिंचाइं
मानुसालिक हेफाजइतें
सरंची–कमल'
पाइल हला चिर सरन
तोरे कोराइं।!

हामें जानल हों
तोंहीं देल हल्हिंन
बिधवा श्सुगियाश के
श्करमाश्रु से मिलाइ के
नावां जिनगी
आपन परपन धाराक
अमर रस पिआइ के।

पइहले
सवांरो हलों हाम
तोइर निरमल पानीं
देइख अपना चेहरा,
दरपन बनो हल
पानी तोर फरीछ!
तोर निरइठ नीर के छुइ
खाइल जा हल किरिया
सचाएक
देल जा हल दोहाइ।
तोर में डूब दइ
हवो हला धइन!

मकिन आइज,
तोंय भइ गेल हें
अइसन बदरूप, मलिन
कि तोर से करों नायं घीन
तो पियार करेक टाओ
बेजायं कठिन!

तोर दहें–घाटें
की कोइ नहइतक?
जिनगी से आलल बेकइत
मोरेक लागिन डुबेहो में
कदरइतक!

दामुदर!
तोञ आइझो बोहे हें
ओहे बेगें, ओहे ठिन।
मगुर, आब तोञ
सभ्यता–संस्किरतिक
परपन साखी नाञ
आस्था–बिसवासेक
बेगवती मुरति नाञ
बइन गेल हें
बिकासेक नामें
मानुसेक भेसतउनिक
बेछंद–बेढब नतीजा।

कहियो तोर निसछल
कलकल धार के देइख
उमको हल मनें साध
कि समइट लों तोर धार के
आपन अंकवाइर के
कइर डागर–चाकर
भइ जाओं बिभोर
आर
एकाकार।

मकिर
आब तो तोरा देइख
लागे हे डर,
लागे हें तोञ
एगो करिया नाग
सनकल–फुंफुवाइल
आवे जइसन
बिसाइ के
ढसेले!

हाय दामुदर !
तोरा की भइ गेल हउ!
कइर देल गेल हउ
तोर की हाल !

की तोञ फइर से
नाञ बने पारें
हामर ओहे दामुदर ?
हामर साधेक दामुदर

संदर्भ
शिवनाथ प्रमाणिक
'दामुदरेक कोराञ'(खोरठा खंड काव्य)

बंशीलाल बंशी
'डींड़ाक डोंआनी' (खोरठा खंड काव्य)

वर्ष :01, अंक : 04, रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19-0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम अजनबी, संपादकीय सलाहकार : नवजीत शाहदेव, फोन : संपादक 7717748632, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : ओम प्रकाश कुमार, 9199255612, सुझाव या शिकायत ई मेल : khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।